



जिला पुस्तिका पंच गौरव झुंझुनू



जिला प्रशासन, झुंझुनू



राजस्थान सरकार

पंच – गौरव कार्यक्रम

जिला-पुस्तिका

जिला प्रशासन, झुंझुनूं



एक ज़िला एक उपज - सरसों



एक ज़िला एक वनस्पति - नीम



एक ज़िला एक पर्यटन स्थल - लोहागर्ह



एक ज़िला एक उत्पाद - लकड़ी के हस्तशिल्प उत्पाद



एक ज़िला एक खेल - बास्केटबॉल



मुख्यमंत्री
राजस्थान

संदेश

राजस्थान को अपनी भौगोलिक विविधताओं, प्राकृतिक संपदा और समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के लिए जाना जाता है। यहां हर जिले की अपनी एक विशिष्ट पहचान है, जो वहां की उपज, हस्तशिल्प, औद्योगिक उत्पाद, खनिज संपदा और पर्यटन स्थलों में परिलक्षित होती है। इन विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए राज्य सरकार ने पंच—गौरव कार्यक्रम की शुरुआत की है, जिसका उद्देश्य प्रत्येक जिले की क्षमता एवं विशिष्टता को पहचानते हुए उनके संरक्षण, संवर्धन तथा विकास के माध्यम से जिलों को एक मजबूत सांस्कृतिक और आर्थिक पहचान प्रदान करना है।

इस कार्यक्रम के तहत हर जिले में पंच गौरव के रूप में एक उत्पाद, एक उपज, एक वनस्पति प्रजाति, एक खेल और एक पर्यटन स्थल चिह्नित किया गया है। यह पहल जिलों की विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण में सहायक होगी और इससे आर्थिक उन्नति तथा रोजगार के नए अवसर सृजित होंगे।

मुझे विश्वास है कि पंच गौरव कार्यक्रम से आमजन के लिए स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर, कौशल उन्नयन, उत्पादकता में वृद्धि एवं विभिन्न क्षेत्रों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना उत्पन्न करने में मदद मिलेगी। साथ ही हमारे संयुक्त प्रयासों से विकसित राजस्थान का सपना भी साकार होगा।

जिले में पंच—गौरव कार्यक्रम अपने उद्देश्यों को हासिल करने में सफल हो, इसके लिए में अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करता हूं।


(भजन लाल शर्मा)

1. प्रस्तावना

राजस्थान राज्य के जिलों में विभिन्न प्रकार की भौगोलिक परिस्थितियाँ हैं। इस कारण यहां अलग-अलग तरह की उपज पैदा होती है एवं विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों पाई जाती हैं। इसी प्रकार राज्य के विभिन्न जिलों में अलग-अलग प्रकार के हस्तशिल्प एवं औद्योगिक उत्पाद प्रमुखता से बनाए जाते हैं। इसके साथ ही राज्य में महत्वपूर्ण खनिजों का खनन एवं प्रसंस्करण कार्य भी कई जिलों में किया जाता है। पर्यटन की दृष्टि से भी राज्य के प्रत्येक जिले में धार्मिक एवं सांस्कृतिक एवं वन्यजीव पर्यटन आदि प्रमुख स्थल मौजूद हैं। राज्य में विभिन्न खेल गतिविधियां भी जिलों की प्रमुख पहचान रही हैं।

राज्य के सर्वांगीण विकास को दृष्टिगत रखते हुए प्रत्येक जिले की क्षमता एवं क्षेत्र विशेष में विशिष्टता के आधार पर उत्पादों/स्थलों का चयन कर उसके संरक्षण एवं संवर्धन एवं विकास के माध्यम से जिले को एक मजबूत सांस्कृतिक एवं आर्थिक पहचान दी जा सकती है।

प्रत्येक जिले में विरासत एवं पर्यावरण के संरक्षण के साथ ही इन गतिविधियों के माध्यम से आर्थिक उन्नति एवं रोजगार के अवसरों में बढ़ोतरी कर प्रदेश के सभी जिलों के सर्वांगीण विकास हेतु राज्य में "पंच-गौरव" कार्यक्रम शुरू किया जा रहा है।

झुंझुनूं जिले में पंच गौरव के रूप में एक जिला एक उत्पाद-लकड़ी के हस्तशिल्प उत्पाद, एक जिला एक उपज-सरसों, एक जिला एक वनस्पति-नीम, एक जिला एक पर्यटन स्थल-लोहार्गल, एक जिला एक खेल-बास्केटबॉल चिह्नित किये गये हैं।

2- कार्यक्रम के उद्देश्य

1. जिले की आर्थिक, पारिस्थितिकी एवं ऐतिहासिक धरोहरों का संरक्षण और संवर्धन।
2. स्थानीय शिल्प, उत्पाद, कला को संरक्षण प्रदान करना एवं उत्पादों की गुणवता, विपणन क्षमता में सुधार एवं निर्यात में वृद्धि करना।
3. स्थानीय क्षमताओं का वर्धन कर जिलों में स्थानीय रोजगार को बढ़ाकर जिलों से प्रवास को रोकना।
4. जिलों के मध्य स्वस्थ प्रतिस्पर्धा विकसित करना।
5. प्रमुख वनस्पति प्रजातियों का संरक्षण एवं इनके वैज्ञानिक व व्यावसायिक प्रयोगों को बढ़ावा देना।
6. खेलों के विकास के माध्यम से स्वास्थ्य में सुधार, रोजगार तथा पहचान सृजित करना।
7. ऐतिहासिक, धार्मिक एवं पर्यटन की दृष्टि से महत्वपूर्ण स्थलों का संरक्षण करना एवं इन स्थलों पर वैश्विक स्तर की आधारभूत सुविधाएं विकसित करना।
8. सभी जिलों में समान विकास को बढ़ावा देकर क्षेत्रीय विषमताओं/असंतुलन को कम करना।

3- ज़िला स्तरीय समिति

जिले में विभागों के साथ समन्वय एवं पंच गौरव संवर्धन एवं विकास हेतु एक विस्तृत कार्ययोजना तैयार कर कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु ज़िला कलेक्टर महोदय की अध्यक्षता में निम्नानुसार समिति का गठन किया गया है -

क्र.सं.	अधिकारी	पद
1.	ज़िला कलेक्टर, झुंझुनूं	अध्यक्ष
2.	महाप्रबंधग, उधोग विभाग झुंझुनूं	सदस्य
3.	संयुक्त निदेशक, कपि विस्तार झुंझुनूं	सदस्य
4.	उप निदेशक उधानिकी विभाग झुंझुनूं	सदस्य
5.	ज़िला वन अधिकारी वन एवं पर्यावरण झुंझुनूं	सदस्य
6.	ज़िला खेल अधिकारी खेल एवं युवा मामलात झुंझुनूं	सदस्य
7.	सहायक निदेशक पर्यटन विभाग झुंझुनूं	सदस्य
8.	सूचना एवं जन समर्पक अधिकारी झुंझुनूं	सदस्य
9.	कोषाधिकारी कोष कार्यालय झुंझुनूं	सदस्य
10.	उप निदेशक आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग झुंझुनूं	सदस्य सचिव

4- ज़िला स्तरीय समिति के कार्य

1. ज़िला स्तर पर चिह्नित पंच गौरव के संबंध में विवरणिका तैयार करना।
2. पंच गौरव प्रोत्साहन के लिए विभागीय समन्वय से ज़िला स्तरीय कार्य योजना एवं ज़िले में उपलब्ध बजट राशि में से विभिन्न कार्यों पर व्यय के प्रस्तावों का अनुमोदन।
3. कार्यक्रम के प्रभावी संचालन हेतु ज़िले की कार्यप्रगति का विश्लेषण एवं समीक्षा।
4. पंच गौरव प्रोत्साहन कार्यक्रम के प्रचार-प्रसार की कार्ययोजना तैयार करना।
5. पंच गौरव-ज़िला पुस्तिका तैयार करना।

समिति की बैठक प्रत्येक तिमाही में कम से कम एक बार आयोजित की जाएगी।

पंच गौरव

एक जिला एक पर्यटन स्थल – लोहार्गल



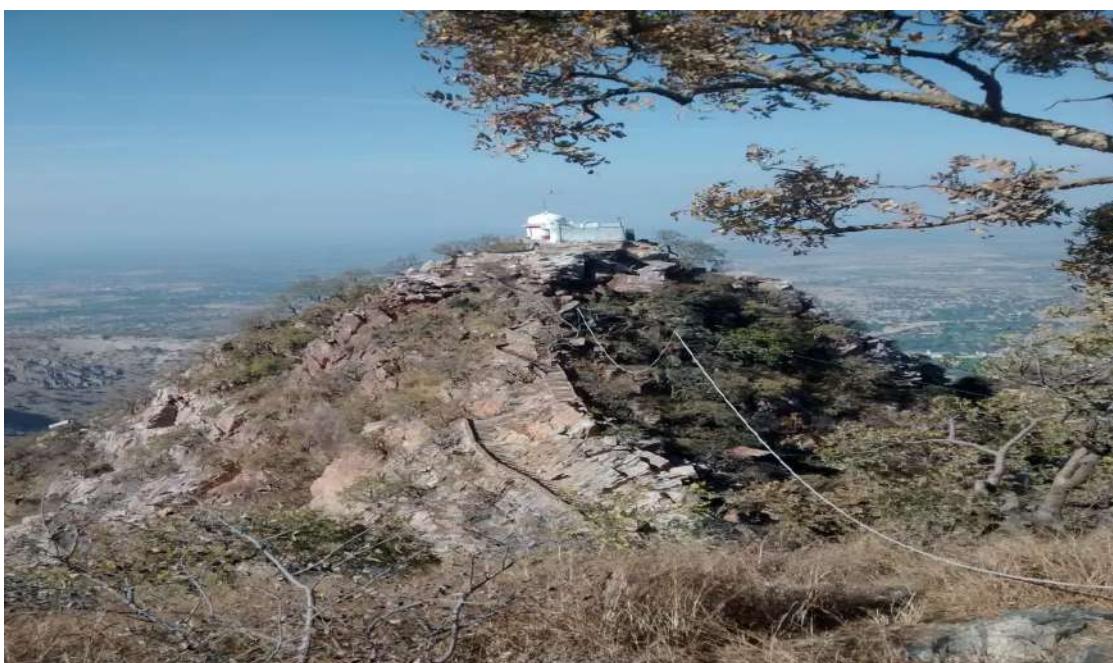
यह धाम झुन्झुनू जिले से 70 किमी० दूर अरावली पर्वतमाला पर स्थित है। लोहार्गल का अर्थ है— वह स्थान जहाँ लोहा गल जाए। पुराणों में भी इस स्थान का जिक्र मिलता है। नवलगढ़ तहसील में स्थित इस तीर्थ 'लोहार्गल जी' को राजनीय भाषा में लुहागरजी कहा जाता है। झुन्झुनू जिले में अरावली पर्वत की सबसे ऊँची चोटी लोहार्गल में है। वर्तमान में राज्य सरकार द्वारा यहां बरखंडी पर्वत तक रोप—वे एवं चौबीस कोसी परिक्रमा मार्ग की पर्यटन विकास कार्य करवाए जाने की घोषणा की गई है।



यह एक प्राचीन धार्मिक तीर्थ स्थल है। वैसे तो इस तीर्थस्थल की महिमा बहुत ही प्राचीन है लेकिन जनश्रुति अनुसार महाभारत युद्ध के बाद युधिष्ठिर आदि पांचों पांडव तीर्थाटन करते हुए यहां आये और यहां के पवित्र कुण्ड में स्नान किया। भीम की गदा यहां गल गई। तब से यह लोहार्गल नाम से प्रसिद्ध हुआ। वर्तमान में यहां लाखों की संख्या में तीर्थ यात्री आते हैं और यहां स्नान करके अपनी मोक्ष की प्रार्थना करते हुए अपने आप को पापों से मुक्त कर परम संतुष्टि प्राप्त करते हैं।



लोहार्गल में वैसे तो सैकड़ों तीर्थ यात्री रोजाना आते ही रहते हैं लेकिन श्रावण और भाद्रपद में लाखों की संख्या में तीर्थ यात्री आते हैं। यहां वर्ष में दो बार मेला लगता है। एक बार तो श्रावण में कावड़ वाले आते हैं और दूसरी बार भाद्रपद की सप्तमी से अमावस्या तक तो विशाल मेला लगता है। इस समय कई लाख तीर्थ यात्री आते हैं जो स्नान करके 24 कोस की परिक्रमा करते हुए पुनः अमावस्या के दिन यहां पहुंच कर स्नान कर अपना मनोरथ पूरा करते हैं। इसके अतिरिक्त पूर्णिमा, सोमवती अमावस्या, सूर्यग्रहण व चंद्रग्रहण के अवसर पर भी यहां काफी संख्या में तीर्थ यात्री आते हैं।



लोहार्गल से चौबीस कौसिये परिक्रमा शुरू होती है। तब चिराणा के आगे किरोड़ी तीर्थ आता है। जहां गर्म व ठण्डे जल के झरने तथा कुण्ड है। यहां भी लोहार्गल परिक्रमार्थी स्नान करते हैं और कोट शाकम्भरी सकराय की ओर बढ़ जाते हैं। किवदन्तियों के अनुसार इस 24 कोसी की परिक्रमा स्थल में ब्रह्म सरोवर था। जहां स्नान करने वाला प्रत्येक धर्मी या पापी सीधा स्वर्ग में ही जाता था।

इस प्रकार जब कोई भी पापी यमराज के यहां नहीं पहुँचता तो उन्होंने धर्मराज से शिकायत की और यह भी कहा कि इस मानसरोवर को ढक या बंद कर देना चाहिए ताकि स्वर्ग और नरक में मृतकों की संख्या अपने कर्मों के अनुसार संतुलन में बनी रहे। तब धर्मराज ने सुमेरु पर्वत के पोते माल और केत (दोनों उड़ने वाले) पर्वतों से कहा कि इस ब्रह्म सरोवर को ढक दो यानि इस पर बैठ जाओ ताकि यहां पर कोई पापी स्नान नहीं कर सके। वे दोनों पर्वत उड़कर आए और मानसरोवर के ऊपर बैठ गए जिससे यह बिल्कुल ही बंद हो गया तो ऐसी स्थिति में मुनियों और तपस्वी सन्यासियों की चिंता बढ़ी तो उन्होंने फिर ब्रह्मा व धर्मराज से प्रार्थना की कि इस प्रकार तो तपस्वियों का भी कल्याण नहीं होगा। अतः हम लोग बिना इस सरोवर में स्नान किए कैसे स्वर्ग में जाएंगे। धर्मराज ने उदारता बरती और माल और केत पर्वतों से अपने पंख कुछ ढीले यानी ऊपर उठाने का निर्देश दिया। जब इन दोनों पर्वतों ने अपने पंख ढीले किये या खोले तो उन स्थानों पर सात गंगा प्रस्फुटित हुई जिनका नाम लोहार्गल, किरोड़ी, शाकभरी, नाग कुंड, टपकेश्वर महादेव, सोभावती गंगा, खोरी कुंड जो इसी 24 कोसी की फेरी में स्थित है और फेरी लगाने वाले इसमें स्नान करते हुए पद यात्री के रूप में आगे बढ़ते रहते हैं।



किवदन्तियों के अनुसार इस तीर्थ स्थल का नाम युगों के हिसाब से भिन्न-भिन्न रहा है जैसे सतयुग में ब्रह्म रिया, त्रेता में कांतिकुर्झ, द्वापर में शंखपुरी व कलयुग में लोहार्गल। सूर्य कुंड में पांडवों ने स्नान किया था क्योंकि जब कुरुक्षेत्र के युद्ध के बाद उन्होंने सोचा कि हमने अपने हथियारों से न जाने कितने लोगों की जान ले ली है तो अवश्य ही पापों के भागी बने हैं तब अपनी पापों की मुक्ति के लिए धर्मराज से तरीका पूछा तो उन्होंने इस देश के तीर्थ स्थलों की यात्रा करने को कहा और यह भी कहा कि जीस तीर्थ स्थल पर स्नान के बाद अपने हथियार भी पखारें या धोए और वे गल जाए तो समझना कि वे अब अपने पापों से मुक्त हो गए हैं और इस तीर्थ स्थल पर ऐसा ही हुआ, स्नान के बाद जब उन्होंने सदैव की भाँति अपने हथियार भी पखारें तो वह गल गये। इस प्रकार इस तीर्थ स्थल का महत्व और भी बढ़ गया और इसे सब तीर्थों का गुरु समझा जाने लगा तब से लेकर आज तक इस तीर्थ स्थल की महिमा वैसी ही बनी हुई है।



सूर्य कुंडमें हमेशा पानी का झरना बहता रहता है। यहां वर्षभर पवित्र जलधारा बहती है। सूर्य कुंड करीब ढाई फीट गहरा है और जल शीतल है। चारों तरफ सीढ़ियां हैं जिन पर पत्थर की पट्टियां जमी हुई हैं। ऊपर प्लेटफार्म चारों ओर बना हुआ है। इस कुंड के ऊपर पूर्व में एक भवन है जिसके पीछे पहाड़ से बरसात में करीब 200 फीट ऊंचा झरना गिरता है। इस सूर्य कुंड के ऊपर चारों तरफ प्राचीन समय के ही सूर्य मन्दिर, लक्ष्मी नारायण जी का मन्दिर, सीताराम जी का मन्दिर, गोपीनाथ जी का मन्दिर, बिहारी जी का मन्दिर, शिव जी का मन्दिर बने हुए हैं। पास में वराह कुंड भी बना हुआ है जो प्राचीन है।

सूर्य मन्दिर लोहार्गल का प्राचीन मन्दिर है। वैसे लोहार्गल में करीब 70 मन्दिर हैं जिनमें पांडवों का व गंगा का मन्दिर भी है। ज्ञान बावड़ी के पास एक शिव मन्दिर है। यह मन्दिर अति प्राचीन है। यहाँ खाकीजी का मन्दिर भी स्थित है। यह वैष्णव सम्प्रदाय का सर्वमान्य मन्दिर है। यह प्राचीन व बड़ा मन्दिर है। यहां नृसिंह भगवान की दो भव्य प्रतिमां हैं। यहां एक मन्दिर रामदेवजी व एक बिड़ला मन्दिर भी है। मन्दिर का भवन सुन्दर एवं सुन्दर छतरियां वाला है।



इस तीर्थ की महिमा इतनी विशाल है कि यहां पर झुंझुनू व सीकर जिले के लोग अपने मृतकों की अस्थियां भी इस झरने में विसर्जित करते हैं और वह अस्थियां एक-दो दिन में स्वतः ही गल जाती हैं। लोहार्गल तीर्थ के पहाड़ों में एक तरफ काफी ऊंचाई पर मालखेत के मंदिर बने हुए हैं जहां जाने के लिए सीढ़ियां बनी हुई हैं दूसरी तरफ सबसे ऊंची चोटी पर करीब 3 किलोमीटर की चढ़ाई पर बरखंडी बाबा का स्थल है।

तीर्थ यात्रियों के आवास हेतु वर्तमान में गोल्याणा से लोहार्गल धाम के रास्ते में व लोहार्गल धाम में 10 – 12 बड़ी धर्मशालाएं हैं एवं लोहार्गल धाम से कुछ दूरी पर 2 – 3 बड़े निजी होटल भी स्थित हैं। इसके अलावा यहां करीब 70 मंदिर हैं जिनमें भीतीर्थ यात्रियों के ठहरने की व्यवस्था हैं।



जब गोल्याणा ग्राम से लोहार्गल की तरफ चलते हैं तो बांई तरफ चेतन दास की बावड़ी आती है। यह बावड़ी अपनी सुन्दरता तथा विशेष स्थापत्य का नमूना है। इस कलात्मक बावड़ी के सात खण्ड हैं। सातवें खण्ड में पानी आता है। जमीन से सीढ़ियां उतरते जाइये। काफी सीढ़िया उतरने पर पहला खण्ड समाप्त होते ही दूसरा दरवाजा आता है। किर दरवाजा और उस पर मकान दिखाई देते हैं। इस प्रकार पानी की सतह तक सात खण्ड है। यह बावड़ी अपने आप में अद्वितीय है। इसकी बावड़ी की तुलना में समस्त शेखावाटी में दूसरी बावड़ी नजर नहीं आती। वहीं के लोग कहते हैं कि चेतन दास व बरखंडी दोनों भाई थे और दोनों ही सिद्ध पुरुष थे। चेतन दास जी ने यह बावड़ी बनवाई और बरखंडी ने यहां के पहाड़ों की सबसे ऊँची चोटी पर स्थान बनवाकर रहने लगे। दोनों ही स्थान अपनी कलात्मकता के कारण प्रसिद्धि प्राप्त हैं।

लोहार्गल की तरफ जब आगे बढ़ते हैं तो करीब ढाई किलोमीटर की दूरी पर एक ज्ञान बावड़ी आती है इसे काशी के राजा सूर्यभान की पुत्री ने बनवाया था। इस ज्ञान बावड़ी के बाई तरफ नदी के उसे पार पहाड़ के नीचे एक मनोरम स्थल है जो भीमकुंड या भीम गोड़ा के नाम से जाना जाता है। किवदन्ती यह भी है कि पांडवों ने सबसे पहले यहीं स्नान किया था। इसी वजह से इस स्थान का अपना ऐतिहासिक एवं धार्मिक महत्व है।



लोहार्गल में प्रति वर्ष आठ से दस लाख श्रदालु आते हैं। यह तीर्थ स्थल अपनी प्राकृतिक रमणीयता के कारण भी विशेष रूप से जाना जाता है। यहाँ पर्यटकों की लिए आधारभूत सुविधाओं का विकास करवाए जाने की आवश्यकता है। साथ ही धार्मिक पर्यटन के साथ साथ इस स्थल पर अन्य पर्यटन गतिविधियों को भी बढ़ावा दिया जाना आवश्यक है। जिससे की यह धाम आने वाले समय में जिले का एक प्रमुख पर्यटन हब बन सकेगा। स्थानीय लोगों को प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से रोज़गार प्राप्त होगा एवं उनकी आय में वृद्धि होगी।



जिला खेलकूद प्रशिक्षण केंद्र

स्वर्ण जयंती स्टेडियम झुंझुनूं



स्वर्ण जयंती स्टेडियम झुंझुनूं

प्रस्तावना:

बास्केटबॉल खेल मनोरंजन, आनंद तथा आपसी मित्रता का साम्राज्य है। प्रत्येक खेल में प्रतिस्पर्धा का स्थान होता है। इसी प्रकार बास्केटबॉल खेल में भी खेल के दौरान दो देशों के मध्य आपसी प्रतिस्पर्धा शुरू होती है। बास्केटबॉल का खेल बच्चों के शारीरिक विकास तथा मानसिक विकास के लिए बहुत लाभकारी है। यह एक आउटडोर गेम है। जो कि कुछ निश्चित नियमों के अनुसार ही खेला जाता है। इन्हीं नियमों के अनुसार बास्केटबॉल खेल के खिलाड़ियों का चयन किया जाता है, अंको की प्राप्ति होती है तथा विजेता को चुना जाता है।



बास्केटबॉल खेल का इतिहास:

1891 के प्रारंभ में, संयुक्त राज्य अमेरिका के स्प्रिंगफील्ड, मैसाचुसेट्स, न्यू इंग्लैंड में सर्दियों की छुट्टियों के दौरान अपने छात्रों को व्यस्त तथा फिटनेस के स्तर को उच्च बनाने के लिए इनडोर गेम की तलाश की जा

रही थी। उस समय जेम्स नाइस्मिथ ने, जो कि कनाडा में शारीरिक शिक्षा के प्रोफेसर रहे, कई बुनियादी नियमों को लिखकर 10 फुट ऊंचे ट्रैक पर एक पीच बास्केट ठोक दी। यह आधुनिक बास्केटबॉल से बेहद भिन्न रहा। इसमें जाली के विपरीत पीच बास्केट की पेंदी बनाई गई जिसमें गेंदों को अंक अर्जन करने पर निकाला जाता था। इस खेल में समय समय के अंतराल पर कई बदलाव हुए। जल्द ही एक बदलाव ऐसा किया गया जिसमें गेंद बास्केट के आर पार हो जाती थी, खेल का यह रूप आधुनिक समय में जाना जाता है। नाइस्मिथ के द्वारा ही इस नए खेल को “बास्केटबॉल” का नाम दिया गया।

इसके अतिरिक्त आधिकारिक तौर पर पहली बार यह खेल नौ खिलाड़ियों के साथ YMCA जिम्नेज़िअम में 20 जनवरी 1892 को खेला गया था। 1892 में ही महिला बास्केटबॉल की शुरुआत स्मिथ कॉलेज में सेंडा बेरेंसन नामक महिला शिक्षिका ने करवाई थी। उनके प्रयासों के फलस्वरूप 21 मार्च 1893 को पहली महिला महाविद्यालीयन खेल का आयोजन हुआ। बास्केटबॉल खेल की बढ़ती लोकप्रियता के साथ ही 1950 के दशक तक बास्केटबॉल खेल का एक प्रमुख कॉलेज भी बन गया था। 1959 में स्प्रिंगफील्ड मैसचुट्स में बास्केटबॉल हॉल ऑफ फेम की भी स्थापना की गई। जहां पहली बार खेल खेला गया।



बास्केटबॉल खेल कैसे खेला जाता है?

बास्केटबॉल खेल में कुल 12 खिलाड़ियों को शामिल किया जाता है। लेकिन खेल में कुल 10 खिलाड़ी ही मैदान में उतरते हैं। जो कि दो टीम में 5-5 खिलाड़ी के तौर पर बटें होते हैं। बास्केटबॉल खेल की शुरुआत रेफरी द्वारा की जाती है। जो कि सबसे बॉल को ऊपर की ओर फेंकता है। बॉल के नीचे गिरने पर जो भी टीम बॉल को संभालती है उसे आक्रामक (defencive) टीम तथा उसके विपरीत दूसरी टीम को रक्षात्मक)offencive) टीम के नाम दिया जाता है। खेल की शुरुआत होने के बाद खिलाड़ी के पास तीन विकल्प होते हैं – बॉल को ड्रिबल करते हुए आगे बढ़ा सकते हैं, बॉल को शूट कर सकते हैं तथा बॉल को ड्रिबल करते हुए आगे पास कर सकते हैं।

खेल के दौरान एक खिलाड़ी अधिकतम पांच फाउल कर सकता है। इससे अधिक फाउल किए जाने पर खिलाड़ी को खेल से बाहर कर दिया जाता है। यह फाउल निम्न प्रकार हैं – पर्सनल फाउल, टेक्निकल फाउल, फ्लैगेट फाउल, टीम फाउल, ब्लैक शूटिंग फाउल। इस खेल में खिलाड़ी को एक बॉल को ड्रिबल करते हुए दस फीट ऊंची बंधी बास्केट में डालना होगा है। उस बास्केट में जाते ही खिलाड़ी से संबंधित टीम को अंक प्राप्त हो जाता है। इस प्रकार जो टीम अधिक से अधिक बॉल टोकरी के अंदर डालती है। वहाँ टीम बास्केटबॉल खेल की विजेता घोषित कर दी जाती है।



भारतीय बास्केटबॉल महासंघ (BFI) का इतिहास:

भारतीय बास्केटबॉल महासंघ (BFI) की स्थापना 1950 में हुई थी, जो भारत में बास्केटबॉल का आधिकारिक शासी निकाय है और FIBA एशिया और भारतीय ओलंपिक संघ से संबद्ध है

झुंझुनूं में बास्केटबॉल:

झुंझुनूं में बास्केटबॉल का इतिहास, खासकर 1967 से 1970 के बीच, कोच चिड़िया बाबू के प्रयासों से जुड़ा है, जिन्होंने 1967 में बास्केटबॉल खेलना शुरू किया और 1970 में राजस्थान टीम के कैप में चुने गए थे।

- झुंझुनूं एक पुराना और ऐतिहासिक शहर है, जिसका अपना जिला मुख्यालय है।
- यह जिला अपनी भव्य हवेलियों पर बने भित्तिचित्रों के लिए प्रसिद्ध है।

- बास्केटबॉल की शुरुआत 1891 में जेम्स नाइस्मिथ ने की थी।
- झुंझुनूं उदयपुर में आयोजित 48 वीं राज्य स्तरीय सब जूनियर बास्केटबॉल प्रतियोगिता के बालिका वर्ग में झुंझुनूं की टीम विजेता रही। जिला बास्केटबॉल संघ के सचिव डॉक्टर सुशील यादव ने बताया कि झुंझुनूं ने सेमीफाइनल में उदयपुर को 28-22 से हराया। फाइनल मुकाबला कांटे का रहा। इसमें भी जयपुर को 51-50 से हराकर राज्य में प्रथम स्थान प्राप्त किया।

अंतर्राष्ट्रीय बास्केटबॉल खिलाड़ी

क्र.सं	नाम	गाँव
1	ओमप्रकाश ढाका	सिलारपुरी
2	दलीप	किंदवाना
3	दर्शन सिंह	किंदाना
4	सरद धादिच	खेतड़ी
5	सुनील टंडन	पिलानी
6	नितेश गुर्जर	

S.NO.	MEDAL	YEAR	AGE GROUP TEAM	PALACE	TEAM
1	सिल्वर	2021	U-14	उदयपुर	BOYS
2	ब्रॉन्ज	2022	U-17	सीकर	BOYS
3	गोल्ड	2023	U-14	उदयपुर	GIRLS
4	ब्रॉन्ज	2023	U-19	झुंझुनूं	BOYS
5	ब्रॉन्ज	2024	U-19	भीलवाड़ा	BOYS
6	ब्रॉन्ज	2024	U-14	डीडवाना	GIRLS
7	ब्रॉन्ज	2024	U-14	डीडवाना	BOYS
8	गोल्ड	2025	U-17	भीलवाड़ा	GIRLS



झुँझुनू बास्केटबॉल



उपलब्ध सुविधाएँ:-

स्वर्ण जयंती स्टेडियम में बास्केटबॉल NIS कोच विजेंद्र सिंह अनुबंध में कार्यरत है, जिनके अधीन 40-50 बच्चे रोजाना अभ्यास करते हैं। स्वर्ण जयंती स्टेडियम में बहुउद्देशीय हॉल इंडोर हॉल, 400 एवं 1600 का अंतरास्त्रीय स्तर का सिंथेटिक ट्रैक उपलब्ध हैं।



राजस्थान सरकार के पंच गौरव योजना के तहत एक एक जिला एक खेल में बास्केटबॉल का चयन होने पर जिले में बास्केटबॉल और ऊर्चाइयों को छुएगा

पंच गौरव
एक जिला एक वनस्पति
नीम



नीम भारतीय मूल का एक पतझड़ वाला/पर्ण-पाती वृक्ष है। जिसका वैज्ञानिक नाम *Azadirachta indica* है। यह वृक्ष तेजी से बढ़ता है और 15 से 20 मीटर की ऊँचाई तक वृद्धि कर सकता है। उच्च तापमान सहनीय होने के साथ साथ, नीम बेकार पड़ी बंजर भूमि पर भी आसानी से उगाया जा सकता है। नीम का तना काष्ठीय होता है तथा इसकी छाल कठोर,

दरारयुक्त या शल्कीय होती है। इसके फूल सफेद रंग के और सुगन्धित होते हैं। इसका फल से निंबोली कहा जाता है, चिकना गोलाकार से अंडाकार होता है।

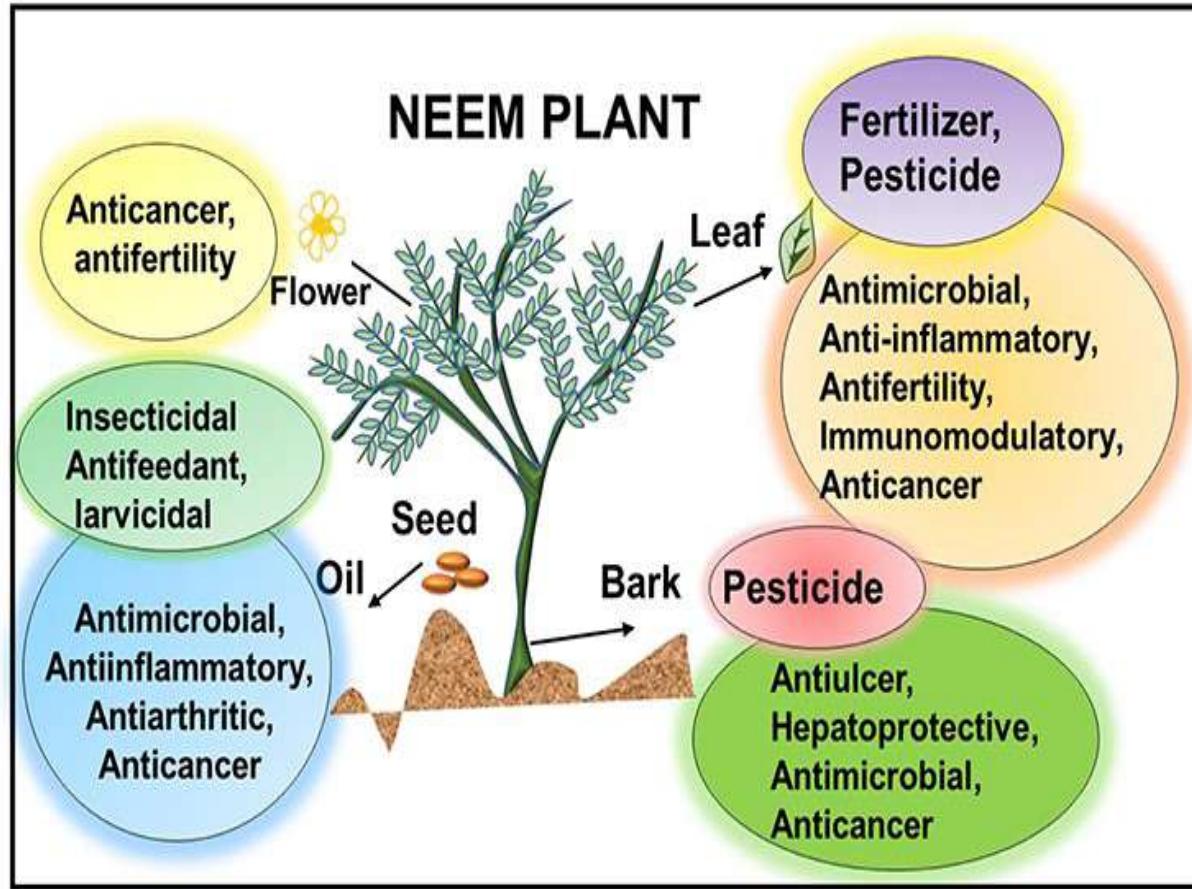
हालाँकि नीम के पेड़ के बीज आसानी से अंकुरित होते हैं और अंकुरणकी दर भी 75 से 90 प्रतिष्ठत के बीच होती है, लेकिन अधिकतर नीम के बीज पकने के तुरन्त बाद ही अंकुरण के अनुकूल होते हैं। इसलिए वर्ष भर कभी भी इन बीजों से पौधे तैयार नहीं हो सकते हैं। इसलिए पौध तैयारी हेतु बीज पकते ही एकत्रित कर बोये जाने आवश्यक है। इसके बीज सामान्यतया माह जून जुलाई में पकते हैं तथा पौध तैयारी हेतु उसी समय उनकी बुवाई की जाती है।





नीम की छाल, पत्तियों और बीजों में विभिन्न प्रकार के रासायनिक पदार्थों (Azadirachtin, Meliantriol, Nimbin, Nimbidin, Nimbinin, Nimbolides और Salanin) का एक समूह (limonoids) पाया जाता है। इन रासायनिक पदार्थों की उपलब्धता के कारण, नीम के पेड़ से लकड़ी और छाया के अतिरिक्त, अनेक प्रकार के स्वास्थ्य और कृषि सम्बंधित लाभ भी लिए जाते हैं। यही कारण है कि नीम को गाँव की फार्मसी (Village Pharmacy) के रूप में जाना जाता है।





नीम स्वास्थ्य के लिए अति लाभकारी वृक्ष है। विभिन्न पौराणिक ग्रंथों में इसके औषधीय गुणों का वर्णन मिलता है। इसके अतिरिक्त अनेक वैज्ञानिक शोधों से भी यह पता चलता है कि नीम के वृक्ष का प्रत्येक भाग औषधीय गुणों को प्रदर्शित करता है।

- नीम की कच्ची पत्तियां चबाने से रक्त शोधन होता है।
- नीम की पत्तियों को पानी में उबाल कर उस पानी से नहाने से चर्म विकारों से बचाव होता है।
- नीम की पत्तियों का लेप बालों में लगाने से बाल स्वस्थ रहते हैं और कम झड़ते हैं।
- नीम में एंटी बैक्टीरियल गुण होते हैं। इसकी दातुन करने से मसूड़ों की सूजन से आराम मिलता है।

स्वास्थ्य के अतिरिक्त नीम का पेड़ कृषि के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। विभिन्न प्रकार की घरेलू विधियों और बाजार में उपलब्ध नीम आधारित अनेक औषधियों और उर्वरकों द्वारा क्रमशः फसल को अनेक कीट-पतंगों, मृदा और बीजजनित बीमारियों और जहरीले रासायनिक उर्वरकों से बचाकर फसल की उत्पादकता को बढ़ाया जा सकता है।

- किसी भी फसल में कीड़ा लगा हो तो उसमें नीम की खली काफी फायदा करती है।

- नीम की पत्तियों का धोल बनाकर फसल पर छिड़काव करने से एफिड्स, व्हाइटफ्लाय, टिझुरी, कैटरपिलर द्वारा किये जाने वाले नुकसान से फसल को बचाया जा सकता है।
- मिट्टी में सुधार के लिए नीम खली का प्रयोग नाइट्रोजन के अभाव की पूर्ति और फसल के पोषण के लिए किया जाता है। यह एक शानदार उर्वरक एवं पोषक के रूप में काम करता है।

लिमोनाइड्स (नीम में पाए जाने वाले रसायनों का एक समूह) की संरचनागत जटिलता और उपयोग के कारण, स्वास्थ्य के लिये अनेक प्रकार के नीम आधारित उत्पाद बनाए जा सकते हैं। भारतीय और विदेशी कई कंपनियां नीम आधारित स्वास्थ्य उत्पादों का विकास कर रही हैं और कई कारणों से इसका बाजार बढ़ रहा है।

वर्तमान कृषि में कीटों का नियंत्रण अक्सर एग्रोकेमिकल्स (जहरीले पदार्थ) के माध्यम से किया जाता है, जिसके परिणामस्वरूप पर्यावरण प्रदूषण और प्रतिरोधी कीटों का विकास हो सकता है। जैवकीटनाशक (प्राकृतिक संसाधनों से बनाए गए कीटनाशक) एक बेहतर विकल्प प्रदान कर सकते हैं। जिससे कीटों की आबादी का सुरक्षित नियंत्रण हो सके। नीम में ऐसे कई प्रकार के लिमोनाइड्स पाए जाते हैं जो कीटों की वृद्धि को रोकने में प्रभावी साबित हुए हैं। नीम के बीज का केक/नीम खली, मिट्टी के कीटों (insects), कवक (fungi), बैक्टीरिया (bacteria) और सूत्रकृमि (nematodes) की संख्या को भी कम करता है। नीम एक नाइट्रिफिकेशन अवरोधक के रूप में भी कार्य करता है, जो बैक्टीरिया की गतिविधि को धीमा करने में मदद करता है।

नीम की खली उर्वरक के रूप में पौधों की वृद्धि के लिए उपयोग किया जाने वाला सबसे पसंदीदा उत्पाद है। नीम आधारित उर्वरक किसानों और उद्यमियों के बीच बहुत लोकप्रिय है। नीम केक का भारत में गन्ने, सब्जी और अन्य नकदी फसलों के लिए उर्वरक के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।



कृषि में नीम का तेल का उपयोग एक प्राकृतिक कीटनाशक और फफूंदनाशक के रूप में किया जाता है, जो विभिन्न प्रकार के कीटों और बीमारियों को नियन्त्रित करने में मदद करता है, जिससे फसलें सुरक्षित रहती है। नीम तेल एक प्राकृतिक उत्पाद है इसलिए यह पर्यावरण के लिए सुरक्षित है और रासायनिक कीटनाशकों के उपयोग से होने वाले नुकसान को कम करता है।



नीम कृषि वानिकी (एग्रोफोरेस्ट्री), समावेशी और टिकाऊ विकास मॉडल का एक अनूठा उदाहरण है। यह सामाजिक (रोजगार), आर्थिक (उच्च आय) और पर्यावरण विकास (मिट्टी की उर्वरता में वृद्धि, जैव विविधता का समर्थन और सिंथेटिक रसायनों के उपयोग को कम करना इत्यादि) को एकीकृत करता है। इसलिए नीम का पेड़ दुनिया भर में स्थायी कृषि प्रणालियों में जबरदस्त क्षमता रखता है।



राजस्थान के झुंझुनू जिले में यह वृक्ष व्यापक रूप से पाया जाता है और यहाँ के लोगों की जीवनशैली, स्वास्थ्य और कृषि में इसकी महत्वपूर्ण भूमिका है। इस वृक्ष को सड़क किनारे वृक्षारोपण, शहरी क्षेत्रों में वृक्षारोपण, धार्मिक स्थलों, शैक्षणिक संस्थानों, अस्पतालों, खेतों की मेड़ पर, सरकारी पड़त भूमि पर वृक्षारोपण आदि के लिए एक अच्छी व उपयुक्त प्रजाति माना जाता है। यह झुंझुनूं जिले की जलवायु के लिये एक उपयुक्त प्रजाति है। झुंझुनूं जिले की जलवायु नीम के अनुकूल होने के कारण इसे एक जिला एक वनस्पति कार्यक्रम के तहत् जिले की वनस्पति के रूप में चयनित किया गया है तथा पंच गौरव में सम्मिलित किया गया है।

झुंझुनूं जिले में नीम के अधिकाधिक वृक्षारोपण हेतु इस वर्ष विभागीय पौधशालाओं में तैयार किये जा रहे 15.50 लाख पौधों में से लगभग 10 प्रतिशत पौधे नीम के तैयार किये जा रहे हैं। जिनका आगामी वर्षा ऋतु में वितरण किया जाकर पौधारोपण करवाया जायेगा। नीम के अधिकाधिक पौधारोपण करवाने हेतु पंच गौरव कार्यक्रम के तहत् जन जागरूकता अभियान चलाकर आमजन में नीम के महत्व, उपयोगिता आदि के लिए रैली आयोजन, नुक्कड़ नाटक, बैनर, फ्लेक्स आदि के माध्यम से जागरूकता अभियान चलाया जाना प्रस्तावित है जिससे के आमजन में नीम के महत्व, उपयोगिता आदि से प्रेरित होकर इसके अधिकाधिक वृक्षारोपण किये जाने की प्रेरणा उत्पन्न होगी।

झुंझुनूं वन विभाग अधीन पाच रेंज स्थित है जिनमें पंच गौरव कार्यक्रम के तहत् प्रत्येक रेंज में वनभूमि/सामुदायिक भूमि में पांच हैक्टर क्षेत्रफल में एक नीम वाटिका विकसित किया जाना प्रस्तावित है। प्रत्येक नीम वाटिका में 1250 नीम के पौधे रोपित किये जाने प्रस्तावित है।

जिनका आगामी पांच वर्ष तक संधारण किया जाकर पेड़ों के रूप में विकसित किया जायेगा। झुंझुनू जिले में नीम के गुणों व उपयोगिता के प्रति आमजन में जागरूकता उत्पन्न किये जाने से नीम आधारित उत्पादों का उत्पादन और विपणन किसानों और उद्यमियों के लिए आय का एक नया स्रोत बन सकता है।

नीम का वृक्ष झुंझुनू जिले के पारिस्थितिक संतुलन, स्वास्थ्य, कृषि और आर्थिक विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसके संरक्षण और उपयोग को बढ़ावा देकर इसे सतत विकास के लक्ष्य से जोड़ा जा सकता है। सामुदायिक भागीदारी और सरकारी सहयोग से नीम को झुंझुनू जिले में एक प्रमुख संसाधन के रूप में विकसित किया जा सकता है।



पंच गौरव वार्षिक योजना



उत्पाद :- वूडन हेण्डी काफ्ट

परिचय:—वूडन हेण्डी काफ्ट झुन्झुनूं जिले के पंच गौरव में से एक गौरव होने के साथ—साथ जिले का एक जिला एक उत्पाद भी है। कोविड महामारी के पश्चात भारत सरकार द्वारा भारतीय लघु ,सिमांत उद्योग—धंधे एवं ग्रामीण अर्थव्यवस्था को पुनः बल प्रदान कर देश की आर्थिक प्रगति में लघु उद्योगों की भागीदारी बढ़ाने के लिए सर्वेक्षण 761 जिलों के 1107 उत्पाद चिन्हित किए गये। इनमें झुन्झुनूं जिले से वूडन हेण्डीकाफ्ट को चिन्हित कर एक जिला एक उत्पाद की सूची में शामिल किया गया।

वूडन हेण्डीकाफ्ट एक नजर में:-

झुन्झुनूं जिले में सदीयों से विरासत के रूप में एक ग्रामीण उद्योग या हाथ की कला के रूप में लकड़ी के काम ने ग्रामीण अर्थव्यवस्था में अपनी महत्वी भूमि का हमेशा बनाए रखी है। इस कला का विस्तार जिले के हर कोने हर ग्राम तक है तथा इसका जुड़ावाहर घर की जरूरत से है। इसी को मध्यनजर रखते हुए इस कला को ग्राम स्तर से बढ़ाकर जिला,राज्य व देश की मुख्य धारा तक लाने के लिए इसे एक जिला एक उत्पाद की श्रेणी में रखा गया।



झुन्झुनूं जिले में विभिन्न प्रकार की लकड़ीयां जिनमें राज्य की स्थानीय प्रजातियां जैसे रोहिड़ा, शिशम,देशी बबूल और अन्य प्रजातियां जैसे आम,सफेदा,सांगवान,टीक इत्यादी का प्रयोग कर उनमें अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए अनेक प्रकार की नक्काशीयां कर तराशते हैं। और पॉलिस का इस्तेमाल कर जब उत्पादपूर्ण रूप से तैयार होता है तो अपनी सुन्दरता से मनमोह लेता है।



झुन्झुनूं जिले के कारीगर सामान्य उत्पाद जैसे कुर्सी, मेज, पलंग, दरवाजे, खीड़कीयां आदि में भी विभिन्न प्रकार की नकासी कर उन्हें सौन्दर्यपूर्ण कर देते हैं तथा हस्तशीली सजावटी उत्पाद जैसे फूलदान, सजावटी आकृतियां बनाते हैं, इन उत्पादों का विक्रय स्थान पहले जिले व जिले के आसपास के बाजार ही हुआ करते थे। एक जिला एक उत्पाद नीति से संवर्धन प्राप्त कर आज कुछ इकाईयां राज्य के बाहर और ऑनलाईन प्लेटफॉर्म पर भी अपने उत्पादों का विक्रय कर पा रही है।





राज्य सरकार द्वारा एक जिला एक उत्पाद के लिए नीति 2024:-



राज्य के जिलों को 'एक जिला एक उत्पाद (ODOP) के तहत चयनित उत्पादों के आधार पर एक्सपोर्ट हब के रूप में विकसित करने हेतु राज्य सरकार द्वारा 08.12.2024 को एक जिला एक उत्पाद नीति- 2024 अधिसूचित की गई है जो दिनांक 31.03.2029 तक प्रभावी रहेगी। एक जिला एक उत्पाद नीति- 2024 के तहत झुंझुनू जिल का उत्पाद बुडन हैण्डीकाफ्ट है।



योजना के मुख्य प्रावधान निम्नानुसार है :-

1. एक जिला एक उत्पाद से संबंधित नवीन सूक्ष्म उद्यमों को 25 प्रतिशत (अधिकतम रु. 15 लाख) एवं लघु उद्यमों को 15 प्रतिशत (अधिकतम 20 लाख) तक पात्र परियोजना लागत पर मार्जिनमनी अनुदान सहायता।
2. उत्पादों के विपणन से संबंधित राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों में भाग लेने पर स्टॉलरेन्ट अनुदान व आवागमन हेतु अधिकतम 2 लाख रु. तक की सहायता।
3. एकीकृत कलक्स्टर विकास योजना के तहत कॉमन फेसिलिटी सेन्टर हेतु सहायता।
4. राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मानक प्रमाणन प्राप्ति तथा Intellectual Property Rights (IPR) हेतु व्यय पर 75 प्रतिशत (अधिकतम 3 लाख रु) तक की पुर्णभरण सहायता।
5. ओडीओपी एमएसएमई उद्यमों में ई-कॉमर्स के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु 2 साल तक प्लेटफार्म फीस का 75 प्रतिशत (अधिकतम 1 लाख रु. प्रतिवर्ष) तक पुर्णभरण।
6. ओडीओपी सूक्ष्म एवं लघु उद्यमों को भारत सरकार/राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित प्रमुख राष्ट्रीय संस्थानों से उन्नत प्रोटोगिकी/सॉफ्टवेयर अधिग्रहण हेतु किए गए व्यय पर 50 प्रतिशत (अधिकतम 5 लाख रु.) तक की सहायता।
7. Cataloguing सेवाओं के लिए और/या पूरी तरह कार्यात्मक लेन-देनवाली ई-कॉमर्स वेबसाइट के विकास के लिए कुल व्यय पर 60 प्रतिशत (अधिकतम 75000 रु.) तक की एकमुश्त



जिला स्तर पर प्रयास एवं प्लान—

वूडन हेण्डीकाप्ट की यूनिट्स तथा आर्टिकल्स द्वारा बनाये गये उत्पादों की प्रदर्शनी हेतु स्थायी बिल्डिंग की आवश्यकता है, जिसके माध्यम से निश्चित स्थान पर उत्पादों की प्रदर्शनी समय—समय पर आयोजित कर विषयन व प्रचार प्रसार के नये आयाम खुल सकें ।

इस हेतु एक ऑडिटोरियम के निर्माण की आवश्यकता है जिसमें हस्तशिल्पी अपने उत्पाद की प्रदर्शनी लगा कर मार्केटिंग के अवसर प्राप्त कर सकें । ऑडिटोरियम निर्माण हेतु ग्रामीण हाट आबुसर में स्थान उपलब्ध है । वित्त पोषण की मांग सरकार के समक्ष इस योजना के माध्यम से प्रस्तुत है ।

ऑडिटोरियम साईज : 50×50 feet = 2500 square feet अनुमानित

स्थान : ग्रामीण हाट आबुसर

2. जिले में निर्मित वुडन हेण्डी काप्ट उत्पाद के प्रचार प्रसार हेतु केटलॉग पुस्तिका का मुद्रण व जिले में अलग—अलग स्थान पर प्रदर्शनी जैसे शेखावाटी हस्तशील्प एवं पर्यटन मेला का आयोजन कर बॉयरसेलर प्लेटफार्म उपलब्ध करा कर वुडन हेण्डीकाप्ट को बढ़ावा देना ।





सरसों की उन्नत खेती

सरसों राजस्थान की प्रमुख तिलहनी फसल है। यह सिंचित क्षेत्रों एवं संरक्षित नमी के बारानी क्षेत्रों में ली जा सकती है। सभी जिलों में ली जाने वाली यह फसल कम लागत और कम सिचाई सुविधा में भी अन्य फसलों की तुलना में सबसे अधिक लाभ प्रदान करती है। इसे अकेले या अन्य फालों के साथ मिश्रित फसल के रूप में बोया जा सकता है।

जिले में सरसों का क्षेत्र व उत्पादन

क्रम. संख्या	वर्ष	क्षेत्रफल हैक्टेयर में	उत्पादन टन में	उपज किग्रा प्रति हैक्टेयर में
1	2021-2022	122630	196670	1604
2	2022-2023	159020	156695	985
3	2023-2024	136463	231441	1696



खेत का चुनाव व तैयारी

सरसों हेतु दोमट व हल्की दोमट मिट्टी अधिक उपयुक्त होती है। उचित जल निकास वाली मिट्टी जो लवणीय एवं क्षारीय न हो ठीक रहती है। इसको हल्की ऊसर भूमि में भी बोया जा सकता है। सरसों की खेती बारानी एवं सिंचित दोनों प्रकार से की जाती है। बारानी खेती के लिये खेत को खरीफ में खाली छोड़ना चाहिये। पहली जुताई वर्षा ऋतु में मिट्टी पलटने वाले हल से करें। समय समय पर खेत की स्थिति के अनुसार 4–6 जुताई कर। सिंचित क्षेत्रों के लिये भूमि की तयारी बुवाई के 3–4 सप्ताह पूर्व प्रारम्भ करे।

जहाँ क्षारीय व लवणीय मिट्टी हो या पानी क्षारीय हो वहाँ मिट्टी परीक्षण के आधार पर बारीक जिप्सम मई माह में खेत में डालकर जुताई कर अच्छी तरह मिला देये और खेत में डोलिया बना देवें ताकि वर्षा का पानी भर सकें जिससे लवण नीचे चले जाये। इसके बाद अक्टूबर के पहले पखवाड़े में खेत तैयार करके सरसों की बुवाई करें। जिप्सम का हर तीसरे वर्ष प्रयोग करें। यदि भूमि अथवा सिचाई जल क्षारीय नहीं है तो तो जिप्सम की आवश्यकता नहीं पड़ेगी।

बीज की मात्रा, बीजोपचार एवं बुवाई –

बुवाई के लिये सिंचित एवं असिंचित क्षेत्रों में बीज की मात्रा 4 से 5 किलो प्रति हैक्टर पर्याप्त है। पौधों के बीच की दूरी 10–15 से. मी. रखते हुये कतारों में 5 से.मी. गहरा बीज बोयें। कतार से कतार की दूरी 30–35 से.मी. रखें। असिंचित क्षेत्रों में बीज की गहराई नमी के अनुसार रखें।

बुवाई के लिये शुष्क क्षेत्र में 4 से 5 किलोग्राम तथा सिंचित क्षेत्र में 2.5 किलोग्राम बीज प्रति हैक्टर पर्याप्त रहता है। बुवाई से पहले बीज को 6 ग्राम एप्रोन 35 एस डी प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करके ही बोयें।

भूमि व बीज उपचार

1. ट्राइकोडर्मा स्पीसीज उत्पाद की 10 किलो मात्रा को 100 किलो आर्दता युक्त गोबर की खाद (एफ.वाई.एम.) में मिलाकर पलेवा करते समय प्रति हैक्टेयर की दर से मिट्टी में मिला दें।
2. विगलन रोग की रोकथाम हेतु कार्बन्डेजिम एक ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज को उपचारित करें।
3. मोयला से बचाव हेतु इमेडाकलोप्रिड 70 डब्ल्यू. जी. 8 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीज को उपचारित करें। इससे पैन्टेड बग का प्रकोप भी कम होता है।
4. सरसों की बुवाई माह अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से माह नवम्बर के प्रथम सप्ताह में कतार से कतार की दूरी 45 से० मी० रखते हुए करने व बुवाई के 40–45 दिन की अवस्था पर डि–टोपिंग (शीर्ष हरण) करने से पैदावार अधिक प्राप्त होती है।
6. सरसों की बुवाई माह अक्टूबर के अंतिम सप्ताह से माह नवम्बर के प्रथम सप्ताह में करके बुवाई के 50–55 दिन की अवस्था पर सेलीसाइलिक एसिड 200 पीपीएम का पर्णीय छिड़काव करने से पैदावार में वृद्धि होती है।
7. सरसों फसल में बुवाई के समय जिंक सल्फेट (21 प्रतिशत) प्रति हैक्टर 25 किलो ग्राम अथवा मोनो हाइड्रेट जिंक सल्फैट (33 प्रतिशत) की प्रति हैक्टर 20 किलो ग्राम मात्रा देवें।

बीजोपचार

बीज को 2 ग्राम मेन्कोजेब या 3 ग्राम थाइरम प्रति किलो बीज की दर से उपचारित करके ही बोयें। रोगों से बचाव के लिये 10 ग्राम ट्राइकोडर्मा प्रति किलो बीज की दर से बीजोपचार करें।

बुवाई का समय

बारानी क्षेत्रों में सरसों की बुवाई 15 सितम्बर से 15 अक्टूबर तक एवं सिंचित क्षेत्रों में इसकी बुवाई अक्टूबर के अन्तिम सप्ताह तक कर देनी चाहिये। सिंचित क्षेत्र में बुवाई पलेवा देकर ही करें। देर से बुवाई करने पर उपज में भारी कमी हो जाती है। साथ ही चेपा तथा सफेद रोली का प्रकोप भी अधिक होता है।

मिश्रित खेती

बारानी चने के साथ मिश्रित खेती करने से अधिक लाभ मिलता है। इससे फसल को पाला नहीं मारता है तथा दवा भी आसानी से छिड़की जा सकती है। सरसों व चने की अन्तर शस्य 7.3 की पंक्ति के अनुपात में बोयें।

उन्नत उपयुक्त किस्में –

सरसों फसल की प्रमुख किस्में एन आर सी डी आर 2 एन आर सी डी आर 601 आर आर एन् 573, गिरिराज (डी आर एम आर आई, जे-31), पूसा सरसों 26. एन पी जे डालिया-112 आदि हैं।

एन.आर.सी.डी.आर. 2

यह किस्म सिंचित अवस्था में बुवाई हेतु अति उतम है। सामान्यतया इस किस्म में लगभग 40 प्रतिशत तेल होता है। सामान्य रूप में बुवाई का उपयुक्त समय 10–25 अक्टूबर ही है किन्तु सम्पूर्ण उत्तर

भारत में क्षेत्रानुसार सितम्बर के अन्तिम सप्ताह से नवम्बर के प्रथम सप्ताह तक बुवाई की जा सकती है। यह किस्म लवणीयता एवं अधिक तापमान के प्रति भी सहनशील है यह मध्यम पकाव अवधि वाली किस्म है जो कि लगभग 140–143 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इस किस्म की औसत उपज 22 किंवद्वय प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म सफेद रतुआ काला धब्बा अंगमारी व स्क्लेरोटीनिया तना सड़न रोगों के प्रति सहनशील है।

गिरीराज (डीआरएमआरआईजे 31) (2014) – यह किस्म सिंचित क्षेत्रों के समय पर बोई जाने के लिए उपयुक्त है। इसके पौधे की औसत ऊँचाई 170 सेमी होती है। इस किस्म में बुवाई के 45–55 दिन बाद 50 प्रतिशत फूल आ जाते हैं। एक पौधे पर 140–240 फलियां (सिलिक्वा) आती हैं। 37–40 प्रतिशत तेल की मात्रा वाली इस किस्म के 1000 दानों का वजन 5.4–5.8 ग्राम होता है। यह किस्म 125–130 दिनों में पककर 15–20 किंवद्वय प्रति हैक्टेयर औसत उपज देती है।

आर.एच. 0749— 2013 में अधिसूचित यह किस्म असिंचित क्षेत्रों में बुवाई के लिए उपयुक्त है जो कि 145–150 दिनों में पक कर 22–23 किंव. प्रति हैक्टेयर औसत उपज देती है। इसमें तेल की मात्रा लगभग 40 प्रतिशत होती है।

आर.एच. 0406 — 2013 में अधिसूचित यह किस्म सिंचित क्षेत्रों में बुवाई के लिए उपयुक्त है जो कि 146–148 दिनों में पक कर 24–28 किंव. प्रैद है तक औसत उपज देती है। इस किस्म में तेल की मात्रा लगभग 39 प्रतिशत होती है। धार चाई से

आर.जी.एन. 298 — कृषि अनुसंधान केन्द्र, श्रीगंगानगर द्वारा विकसित सरसों की यह किस्म वर्ष 2012 में राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, दिल्ली तथा जम्मु क्षेत्र के लिए अधिसूचित की गई है। देरी से बुवाई योग्य यह किस्म 25 नवम्बर तक बोई जा सकती है। यह देरी से बोई जाने वाली प्रचलित किस्मों से अधिक पैदावार देती है इसका औसत उत्पादन 4–5 किंवद्वय प्रति बीघा है। यह किस्म 127 दिन में पक जाती है तथा इसके हजार दानों का वनज 3.95 से 4.80 ग्राम तक पाया जाता है। इसमें मुद्रोमिल आसिता रोग चर्णिल रोग तना गलन एवं आल्टरनेरिया पर्णचिति के लिए प्रतिरोधी पाई गई है।

डी.आर.एम.आर. 150–35 भा.कृ.अ.प. सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर द्वारा सरसों की यह किस्म वर्ष 2015 में विकसित की गई। इसके पौधे की उंचाई 145–155 सेमी तथा 1000 दानों का वजन 4.6 ग्राम होता है। यह किस्म 130 से 135 दिनों में पककर तैयार होती है जिसकी औसत पैदावार 13 से 17 किंवद्वय प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म जल्दी बुवाई वाले असिंचित क्षेत्र के लिए भी उपयुक्त है।

डी.आर.एम.आर. 1165–40 भा.कृ.अ.प. सरसों अनुसंधान निदेशालय, भरतपुर द्वारा सरसों की यह किस्म वर्ष 2018 में विकसित की गई। इसके 1000 दानों का वजन 4.5 से 5.5 ग्राम होता है। यह किस्म 130 से 140 दिनों में पककर तैयार होती है जिसकी औसत पैदावार 12 से 16 किंवद्वय प्रति हैक्टेयर है। यह किस्म समय पर बुवाई वाले असिंचित क्षेत्रों के लिए भी उपयुक्त है।

सीएस–60 (2018) (प्रोविजनल) — केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान, करनाल द्वारा विकसित किस्म है। इस किस्म में लगभग 41 प्रतिशत तेल की मात्रा होती है। लवण प्रभावित क्षेत्र में 22 किंवद्वय प्रति हैक्टेयर तक उत्पादन ले सकते हैं। सामान्य परिस्थितियों में करीब 29 किंवद्वय तक इसका उत्पादन होता है। यह किस्म लगभग 125–132 दिनों में पककर तैयार हो जाती है। पौधों की ऊँचाई 182–187 सेमी और 1000 दानों का वजन 5.0–5.5 ग्राम है। इस किस्म में अन्य किस्मों के मुकाबले रोग प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा है। अल्टरनेरिया ब्लाइट, सफेद रतुआ, पाउडरी, फफूंदी, स्टैग हेड एवं स्क्लेरोटीनिया तना गलन जैसी बीमारियां के प्रति प्रतिरोधी हैं।

आर. एच.–725 (2018) (प्रोविजनल)— यह किस्म हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार के द्वारा विकसित की गई है। यह किस्म लगभग 135–143 दिन में पककर तैयार हो जाती है। इसकी फलियां लंबी एवं फलियों में दानों की संख्या 17–18 तक होती है तथा दानों का आकार मोटा होता है। इनके अतिरिक्त इसकी

फलियों वाली शाखाएं लंबी होती हैं एवं उनमें फुटाव भी ज्यादा है। सामान्य परिस्थितियों में करीब 30 विवटल / हैक्टेयर अधिकतम उपज ले सकते हैं।

जैविक खाद एवं भूमि उपचार –

सिंचित फसल के लिये प्रति हैक्टर 8–10 टन कच्चा सड़ा हुआ देशी खाद एवं 250 किग्रा जिप्सम बुवाई के तीन बार सप्ताह पहले खेत में डालकर तैयार करें। असिंचित क्षेत्र में वर्षा से पहले 4–5 टन सड़ा हुआ देशी खाद प्रति हैक्टर एक दो वर्षा के बाद खेत में फैलाकर जुताई करें। दीमक और अन्य कीड़ों की रोकथाम हेतु बुवाई से पूर्व अन्तिम जुताई के समय क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर खेत में डाल कर जुताई करें। नमी को ध्यान में रखकर जुताई के बाद पाटा लगायें। वर्मी कम्पोस्ट 2.5 टन प्रति हैक्टेयर अंतिम जुताई के समय भूमि में मिलाएँ। इसके पश्चात् सिफरिश की गई रासायनिक उर्वरकों की मात्रा केवल 75 प्रतिशत ही देवें। वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग करने पर गोबर की खाद देने की भी आवश्यकता नहीं है।

उर्वरक प्रयोग

सिंचित फसल के लिये 60 किलोग्राम नत्रजन 30 से 40 किलोग्राम फास्फोरस डी ए पी से देना हो तो 250 किलोग्राम जिप्सम या 40 किलोग्रामगन्धक चूर्ण प्रति हैक्टर देवें एवं जहां फास्फोरस सिंगल सुपर फॉर्स्फेट से देना हो तो 80 किलोग्राम जिप्सम प्रति हैक्टर अंतिम जुताई के समय बिखेर कर दें। नत्रजन की आधी मात्रा व फास्फोरस की पूरी मात्रा बुवाई के समय ऊर कर दें तथा शेष नत्रजन पहली सिंचाई के साथ दें। असिंचित क्षेत्रों में इन उर्वरकों की आधी मात्रा अर्थात् 30 किलोग्राम नत्रजन एवं 15 किलोग्राम फास्फोरस बुवाई के समय उपयोग करें। पेटा काश्त क्षेत्र में 45 किलोग्राम नत्रजन एवं 15 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हैक्टर बुवाई से पूर्व दें। क्षारीय मिट्टी वाले क्षेत्रों में 90 किलोग्राम नत्रजन प्रति हैक्टर तक दी जा सकती है। जिप्सम उपचारित, सामान्य एवं क्षारीय भूमि व पानी वाले क्षेत्रों में 25 किलोग्राम जिंक सल्फेट बुवाई के समय अन्य उर्वरकों के साथ ऊरकर दें। अधिक उत्पादन लेने हेतु सरसों की फसल में 50 प्रतिशत फूल आने पर थायोयूरिया या गन्धक के तेजाब के 0.1 प्रतिशत का प्रथम छिड़काव करें एवं प्रथम छिड़काव के 20 दिन बाद दूसरा छिड़काव करें। बाजरा, सरसों फसल चक्र में अधिक उत्पादन लेने हेतु सरसों की फसल में नाइट्रोजन व फास्फोरस के अलावा 30 किलोग्राम पोटाश, 100 किलोग्राम जिप्सम, 10 किलोग्राम जिंक सल्फेट एवं 10 किलोग्राम फेरस सल्फेट प्रति हैक्टर के हिसाब से बुवाई के समय देवें। सरसों की अधिक उपज व गुणवत्ता के लिए फास्फोरस की अनुशंसा मात्रा (40 किग्रा प्रति है.) को डीएपी से देकर साथ में फास्फोरस घुलनशील बेकटीरिया से बीजोपचार करना चाहिये अथवा फास्फोरस की अनुशंसा मात्रा (40 किग्रा प्रति है.) को आधा डीएपी से तथा आधा भाग प्रोम (च्च्व) से दिया जाये साथ ही फास्फोरस घुलनशील बेकटीरिया से बीजोपचार किया जाकर सरसों की अधिक उपज ली जा सकती है। जिंक सल्फेट 0.5 प्रतिशत तथा वर्मीवाश (10 प्रतिशत) का सरसों की बुवाई के 35 दिन बाद पर्णीय छिड़काव करने से अधिक उत्पादन प्राप्त होता है।

सिंचाई एवं निराई—गुज़ाई

प्रथम सिंचाई 30–40 दिन बाद फूल आने से पहले करें। तत्पश्चात् आवश्यकतानुसार दूसरी सिंचाई 70–80 दिन में करें। सरसों की फसल में फव्वारा पद्धति से बुवाई के 25, 50, 75, 95 व 110 दिन बाद सिंचाई करें तथा प्रत्येक सिंचाई के लिए चार घण्टे फव्वारा चलायें। लवण युक्त पानी का उपयोग सिंचाई के उद्देश्य से सावधानीपूर्वक और जैविक मल्चिंग का उपयोग करना चाहिए ताकि मिट्टी में लवण की मात्रा फसल की जड़ क्षेत्र में सबसे कम और मिट्टी के लवणीकरण कर प्रक्रिया को कम किया जा सकें। खारे पानी में सरसों की किस्मों एन आर सी एच बी-101 और गिरीराज अन्य किस्मों सी एस-60 की तुलना में पानी की सीमित उपलब्धता में अच्छा प्रदर्शन किया इसलिए खारे पानी वाले क्षेत्रों में ऐसी किस्मों का चयन उचित रहेगा जो लवण का अवशोषण करके मिट्टी में लवण की मात्रा का संतुलन बनाए रखें। पौधों की संख्या अधिक हो तो

बुवाई के 20–25 दिन बाद निराई के साथ छंटाई कर पौधे निकालें तथा पौधों के बीच 10–12 सेन्टीमीटर की दूरी करें। सिंचाई के बाद गुड़ाई करने से खरपतवार नष्ट होने के साथ फसल की बढ़वार अच्छी होगी।

सरसों में रासायनिक खरपतवार नियंत्रण हेतु फसल की बुवाई के तुरंत बाद पैण्डामैथलिन 30: ई. सी. सक्रिय तत्व 750 ग्राम (2.5 लीटर व्यावसायिक उत्पाद) प्रति हैक्टेयर 600–800 लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करें अथवा इसी मात्रा को बुवाई से पूर्व अंतिम जुताई के पूर्व भी छिड़काव करने पर अच्छी तरह से खरपतवार नियंत्रण किया जा सकता है। प्याजी की रोकथाम के लिये फ्लूकलोरेलिन एक लीटर सक्रिय तत्व प्रति हैक्टर की दर से भूमि में मिलाकर बुवाई करें। फ्लूकलोरेलिन बुवाई से पूर्व भूमि में मिला देना चाहिये, उसके बाद फसल की बुवाई करें।

कम वर्षा वाले क्षेत्रों में नमी संरक्षण के लिये मृदा सतह पर कतारों के बीच बुवाई के 15 दिन बाद ग्वार का सूखा तूड़ा 4 टन या धमासा 8 टन प्रति हैक्टर की बिछावन (स्ट्रामल्च) बनाकर अधिक पैदावार ली जा सकती है। दो वर्षीय फसल चक्र में बाजरा—सरसों—ग्वार—जौ फसलों की बुवाई करें तथा दो वर्ष में एक बार प्रति हैक्टर 5 टन गोबर की खाद डालें।

पौध संरक्षण

विगत कुछ वर्षों में क्षेत्रफल में वृद्धि, कृषि के विविधिकरण, उन्नत कृषि क्रियाओं, संतुलित खाद एवं पोषक तत्वों के उपयोग तथा उन्नतशील प्रजातियों के उपयोग से सरसों के उत्पादन एवं उत्पादकता में काफी वृद्धि देखने को मिली है, परन्तु यह वृद्धि हमारी आशाओं के अनुरूप नहीं है। सरसों में लगने वाली बीमारियां एवं कीट कम उत्पादन एवं उत्पादकता के लिए प्रमुख रूप से जिम्मेदार हैं। सरसों की फसल में तीस से भी ज्यादा बीमारियों का प्रकोप होता है। जिसके कारण उपज में 35 प्रतिशत की हानि होती है, समय रहते इन बीमारियों की पहचान कर उचित प्रबंधन तकनीकों का उपयोग करते हुए हम सरसों की उपज को अधिक से अधिक बढ़ा सकते हैं तथा खाद्य तेलों के आयात में होने वाले व्यय को कम कर सकते हैं।

प्रमुख कीट

सरसों भारत की महत्वपूर्ण तिलहन फसल हैं, बहुत से कारक इनके कम व अस्थिर उत्पादन के लिए उत्तरदायी हैं, जिनमे से नाशीकीट प्रमुख हैं और फसल की विभिन्न अवस्थाओं में नुकसान पहुंचाते हैं। सरसों को लगभग 50 नाशीकीट नुकसान पहुंचाते हैं यह कीट उपज में लगभग 27 से 32 प्रतिशत वं तेल में 3 से 4 प्रतिशत की कमी कर देता है। समय पर इन कीटों की पहचान कर उचित प्रबंधन तकनिकों का उपयोग कर उपज को अधिक बढ़ाकर किसान की आय दुगनी कर सकते हैं।

पेन्टेड बग व आरा मक्खी की पहचान एवं जैविक नियंत्रण

पेन्टेड बग कीट का प्रकोप सरसों फसल के अंकुरण के तुरन्त बाद होता है। फसल की 7–10 दिन अवस्था में यह कीट पत्तियों का रस चूसकर फसल को पूरी तरह नष्ट कर देता है। पेन्टेड बग व आरा मक्खी अंकुरण के 7–10 दिन में ये कीट अधिक हानि पहुंचाते हैं। इनकी रोकथाम के लिये क्यूनालफॉस 1.5 प्रतिशत या मैलाथियान 5 प्रतिशत 20 से 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से प्रातः या सायंकाल भुरकें / छिड़कें।



क्षति करता अर्भक

आरा मक्खी सरसों फसल के अंकुराहर के 25–30 दिन में अधिक नुकसान पहुंचाती है। इस कीट की सूँड़ी ही फसल को नुकसान पहुंचाती है। पोथों को पत्ती रहित कर देता है एवं केबल डण्ठल छोड़ती है। अत फसल की प्रारम्भिक अवस्था में निगरानी आवश्यक है। अन्डोदभेदन के समय लार्वा 2 मिमी लंबा, शरीर तथा काले रंग का होता है पूर्ण विकसित लार्वा 15 से 18 मिमी लंबा तथा सुँड़ी की तरह लगता है। यह कीट नाशीकीट के रूप में फसल की छोटी अवस्था (अक्टूबर व नवम्बर) प्रकट होता है। लार्वा (अर्भक) पत्तियों को काटकर अनियमित आकार के छेद कर देते हैं। बड़े लार्वा पत्तियों को किनारे की तरह से खाना शुरू करते हैं और पत्तियों के मध्य शिरा तक खाते हैं। अधिक प्रकोप के समय फसल ऐसे लगती हैं जैसे किसी जानवर ने खा लिया हो। जब फसल छोटी अर्थात् 3–4 सप्ताह पुराणी हो तब सबसे अधिक नुकसान पहुंचती है। सरसों की आरामक्खी प्राय अक्टूबर व नवम्बर माह में फसल पर आक्रमण करती है। मध्यम जलवायुवीय दशायें (20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान) और कम आर्द्धता इसके विकास के लिए अनुकूल हैं।

प्रौढ़ सरसों की आरामक्खी

आरा मक्खी सरसी फसल के अंकुराहर के 25–30 दिन में अधिक नुकसान पहुंचाती है। इस कीट की सूँड़ी ही फसल को नुकसान पहुंचाती है। पोथों को पत्ती रहित कर देता है एवं केबल डण्ठल छोड़ती है। अत फसल की प्रारम्भिक अवस्था में निगरानी आवश्यक है। अन्डोदभेदन के समय लार्वा 2 मिमी लंबा, शरीर तथा काले रंग का होता है पूर्ण विकसित लार्वा 15 से 18 मिमी लंबा तथा सुँड़ी की तरह लगता है। यह कीट नाशीकीट के रूप में फसल की छोटी अवस्था (अक्टूबर व नवम्बर) प्रकट होता है। लार्वा (अर्भक) पत्तियों को काटकर अनियमित आकार के छेद कर देते हैं। बड़े लार्वा पत्तियों को किनारे की तरह से खाना शुरू करते हैं और पत्तियों के मध्य शिरा तक खाते हैं। अधिक प्रकोप के समय फसल ऐसे लगती हैं जैसे किसी जानवर ने खा लिया हो। जब फसल छोटी अर्थात् 3–4 सप्ताह पुराणी हो तब सबसे अधिक नुकसान पहुंचती है। सरसों की आरामक्खी प्राय अक्टूबर व नवम्बर माह में फसल पर आक्रमण करती है। मध्यम जलवायुवीय दशायें (20 से 30 डिग्री सेल्सियस तापमान) और कम आर्द्धता इसके विकास के लिए अनुकूल हैं।

आरा मक्खी का जैविक नियंत्रण

खेतों में साफ सफाई रखनी चाहिये तथा आसपास से खरपतवार तथा पादप अवशेषों को जला देना चाहिये। खेत की गर्मीयों में गहरी जुताई करनी चाहिये। बीज को नीम के तेल से 3 से 5 मिली प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करें। हाथों से पकड़ कर शुरूआती अवस्था के अर्भक (लार्वा) को करोसिन (1%) तेल में डाल कर नष्ट कर देना चाहिये। बुवाई के 3–4 सप्ताह बाद यदि संभव हो तो पहली सिचाई कर देनी चाहिये जिससे कि अर्भक निचे गिरकर मर जाये। इसके नियंत्रण हेतु नीम निम्बोली का अर्क (एन.एस.के.ई.) का 5 प्रतिशत अथवा 2 से 3 प्रतिशत नीम का तेल अथवा 10 प्रतिशत नीम की पत्ति के सत का घोल बनाकर 2–3 बार 15 दिनों के अन्तराल में छिड़काव करें। अर्भक की रोकथाम के लिए 3 से 5 लीटर गोमूत्र बराबर मात्रा में गाय के गोबर के साथ मिलाकर 4 दिन तक रखें व इस मिश्रण को छानकर 250 ग्राम बुझा चूना मिलाये व 50 से 80 लीटर पानी में घोल बनाकर एक एकड़ में छिड़काव करें।

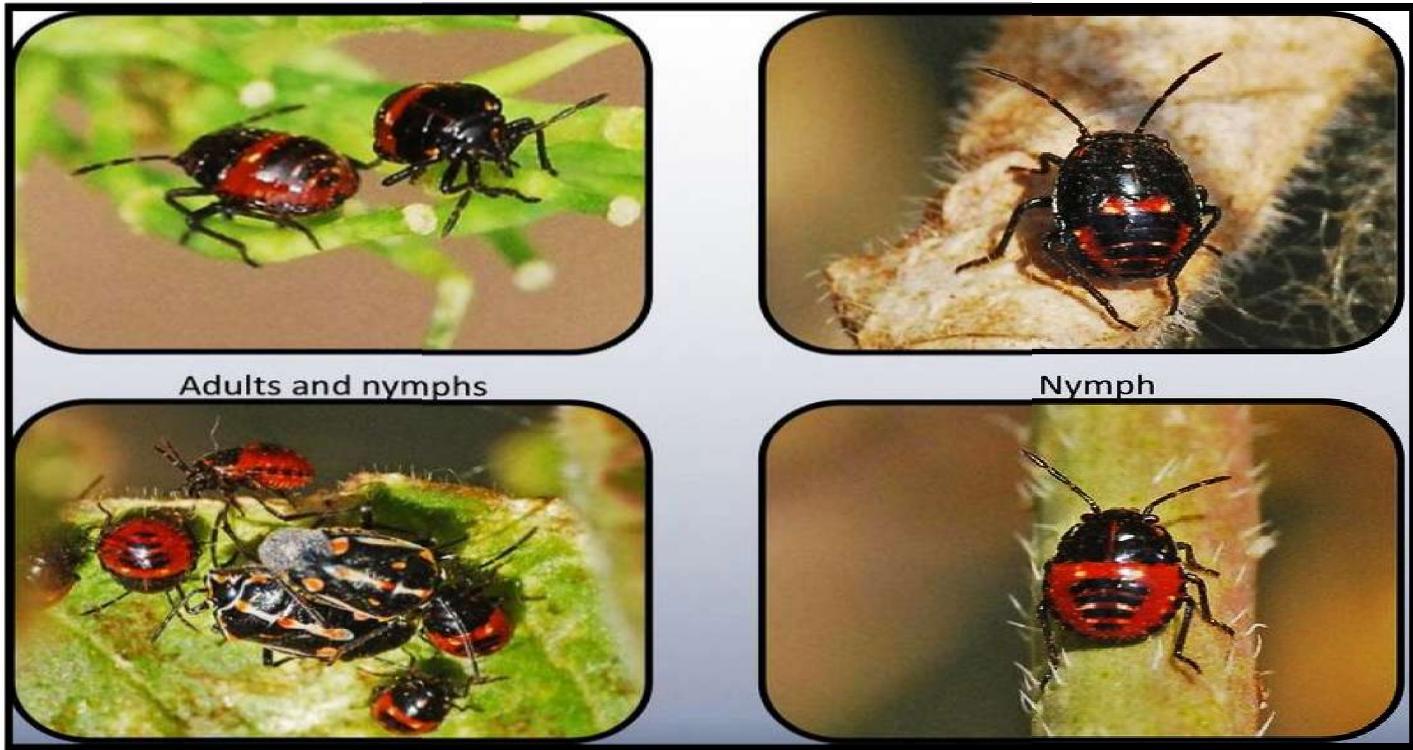
सरसों में चितकबरा मत्कुण (पेन्टेड बग) का समेकित प्रबंधन

चितकबरा मत्कुण अत्यधिक बहुभोजिये नाशीकीट हैं। भारतवर्ष में जहाँ से जाता है यह कीट राजस्थान, पंजाब, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, वं मध्यप्रदेश में इस कीट को चितकबरा, सुन्दर, दगीला, धोलिया आदि नामों से जाना जाता है। शरीर के ऊपर चमकीले नारंगी रंग के चकते होते हैं इसकी चोड़ाई लगभग 10 मिमी है पूर्ण विकसित शिशु 4 मिमी— लंबा व 2–6 मिमी— चोड़ा होता है जिस पर गूरा बार्बा बाइ जाता है य पहले व दूसरे अवस्था के शिशु कीट का रंग चमकीला नारंगी और तीसरी, चोथी, वं पांचवी का रंग लाल होता है



इस कीट का फसल पर दो बार आक्रमण होता है। प्रथम बुवाई के 5 से 7 दिन की फसल पर ही आक्रमण शुरू कर देता है कीट फसल के छोटे-छोटे पोथों को ज्यादा नुकसान पहुंचता है, इसके प्रोड व शिशु दोनों ही पोथों से रस चूसते हैं जिससे पत्तियाँ पर सफेद-सफेद चकते हो जाते हैं अत्यधिक प्रकोप

की दशा में पत्तियों सफेद हो जाती हैं, पौधा पूर्णतः सूख जाता है और कभी—कभी दुबारा भी बुवाई की जाती हैं फलियाँ बनने और पकने की अवस्था के समय दोबारा इस कीट का प्रकोप होता है। जिससे फलियों में दानों का आकार छोटा, संकुचन व सिकुड़ जाते हैं। जिससे उपज व तेल की मात्रा में कमी हो जाती है। फसल के समय यदि गर्म व मध्यम तापमान रहे (सितम्बर—नवम्बर और मार्च से मङ्गाई तक) तो चितकबरा मत्कुण अत्यधिक आक्रमण होता है। मध्यम तापमान (20–40 डिग्री सेल्सियस) व कम आर्द्धता मत्कुण के गुणन के लिए उपयुक्त हैं।



खेतों में साफ सफाई रखनी चाहिये तथा आसपास से खरपतवार तथा पादप अवशेषों को जला देना चाहिये। खेत की गर्भायों में गहरी जुताई करनी चाहिये। बीज को इमिडाक्लोप्रिड 70 डब्लयू-पी— से 5 ग्राम प्रति किलोग्राम बीज की दर से बीजोपचार करे। बुवाई के 3–4 सप्ताह बाद यदि संभव हो तो पहली सिचाई कर देनी चाहिये जिससे कि मिट्टी के अन्दर दरारों में रहने वाले कीट मर जाये। फसल की छोटी अवस्था में यदि चितकबरा मत्कुण अत्यधिक आक्रमण हो तो क्यूनालफास 1–5 प्रतिशत धूल 20 से 25 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से भुरकाव करे। अत्यधिक प्रकोप के समय मेलाथियान 50 ई.सी. की 2 मिली पर लीटर (1200 मिली) के हिसाब से छिड़काव करे। कीट का प्रकोप हो तो मेलाथियान 50 ई.सी. क्यूनालफास 25 ई.सी. की 1–5 लीटर मात्रा को पकते समय यदि फसल पर 750 लीटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से छिड़काव करे। कटाई के समय फसल का रंग सुनहरा होने पर कटाई कर ले जिससे की अधिक हानि न हो व खलिहान में अधिक नुकसान से बचने के लिए जल्द से जल्द मङ्गाई कर देनी चाहिये।

मोयला

यह कीट लगभग 2 मि.मी लम्बे अण्डाकार, सलेटी या जैतूनी हर रंग के नन्हे कीट हैं। जो तेजी से प्रजनन करके भारी संख्या में पनपते हैं व पौधे की पत्ती, फूल तथा फलियों से रस चूसता है। जिससे पौधा कमज़ोर होकर सूख जाता है।

मोयला के आर्थिक दृष्टि से नियन्त्रण के लिये फसल में मोयला दिखाई देने के एक सप्ताह के अन्दर या मुख्य शाखा की ऊपरी भाग की 10 समी लम्बाई के माहू की संख्या 20–25 होने पर रासायनिक नियन्त्रण

अपनाए अथवा नीम की निम्बोली में प्राप्त अर्क का 5 प्रतिशत घोल का प्रथम छिड़कार बुवाई के 45 दिन बाद एवं दूसरा तथ तीसरा छिड़काव 15 दिन के अन्तराल पर करें। मोयला की रोकथाम हेतु मैलाथियान 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर भुरकें अथवा पानी की सुविधा वाले क्षेत्रों में मैलाथियान 50 ई. सी. सवा लीटर या डाइमिथोएट 30 ई. सी. 875 मिलीलीटर कार्बरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण ढाई किलोग्राम अथवा क्लोरपायरीफॉस 20 ई. सी. 600 मिलीलीटर कार्बरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण जी. 100 ग्राम (प्रोविजनल) प्रति हैक्टर की दर से पानी में मिलाकर छिड़काव करें।



हीरक तितली (डायमण्ड बैंक मोथ)

मुख्य रूप से यह सरसों वर्गीय फसल जैसे सरसों, फूलगोभी, पत्तागोभी इत्यादि का एक विनाशकारी कीट है। यह सरसों फसल में कभी-कभी आक्रमण कर भारी नुकसान कर सकता है। इसके रोकथाम हेतु एक लीटर क्यूनॉलफॉस 25 ई. सी. प्रति हैक्टर के हिसाब से छिड़कें।



प्रमुख रोग

काला धब्बा या पर्ण चित्ती

वह बीमारी पौधों की निचली पत्तियों पर छोटे-छोटे गहरे भूरे रंग के बिन्दु के रूप में प्रकट होती है, जो कि तेजी से बढ़कर एक सेण्टीमीटर तक के वृत्ताकार बड़े धब्बों का रूप ले लेती है। यह रोग तीव्र गति से बढ़कर ऊपर की पत्तियों, काला धब्बा तनों व फलियों को ग्रसित करता है। ग्रसित फलियों का बीज भी प्रभावित होकर सिकुड़ कर छोटा हो जाता है और अधिक उग्रता होने पर सड़ भी जाता है। अनुकूल परिस्थितियों में पत्तियों के धब्बे आपस में मिलकर अंगमारी के लक्षण प्रकट करते हैं और पत्तियों मुरझा कर गिरने लगती है। स्वस्थ व प्रमाणित बीज प्रयोग में लायें। रोगग्रसित फसल अवशेषों को जलाकर नष्ट करे दें तथा खरपतवार को नष्ट करे। रोक की रोकथाम के लिए आईपोडियॉन (रोवरॉल) या मैनकोजेब (डाइथेन एम 45) फफूंदीनाशक के 0.25 प्रतिशत घोल (2 किलोग्राम दवा की मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से) का रोग दिखने पर छिड़काव करें।



सफेद रोली या श्वेत किट्ट

रोग ग्रसित पौधों की पत्तियों की निचली सतह पर 1–2 मि.मि. व्यास के स्वच्छ व सफेद रंग के छोटे-छोटे फफोले (स्पोट) बनते हैं जो कि बाद में आपस में मिलकर अनियमित आकार ग्रहण करते हैं। इन फफोलों के ठीक ऊपर पत्ती की उपरी सतह पर गहरे भूरे कत्थई रंग के धब्बे दिखने लगते हैं। पूर्ण विकसित हो जाने पर फफोले फट जाते हैं और सफेद भूरे चूर्ण के रूप में बीजाणु धानियाँ फैल जाती हैं। तना व फलियों पर भी फफोले बन जाते हैं। अतिवर्धन (हाइपरप्लेसिया) व अतिवृद्धि (हाइपरट्राफी) के कारण ग्रसित भाग यथा तना, पुष्पक्रम, पुष्प दण्ड आदि फूल कर माँसल हो जाते हैं और इसके प्रभाव से उत्पन्न आंशिक व पूर्ण नपुंसकता के कारण बीज नहीं बन पाते। इस फूली हुई संरचना को बारहसिंघा (स्टेगहेड) कहते हैं। आरम्भ में छोटे-छोटे गोलाकार मटमैले भूरे या बैंगनी रंग के धब्बों प्रथम दो पत्तियों व अन्य पत्तियों की निचली सतह पर बनते हैं, जो कि आपस में मिलकर अनियंत्रित आकार ग्रहण कर लेते हैं फलस्वरूप पत्तियाँ सिकुड़ जाती हैं और नाजुक हो जाने के कारण तनिक में ही फट जाती हैं। इन्हीं धब्बों पर मटमैली सफेद या बैंगनी रंग की कदकीय वृद्धि (धुनी हुई रूपई के समान) दिखाई देती है। सूजे हुए पुष्पांगों पर मृदुरोमिल आसिता व सफेद रत्नुआ के मिश्रित लक्षण भी दिखाई देते हैं।

रोकथाम

सरसो फसल की समय (1–20 अक्टूबर के बीच) से बुआई करें। स्वस्थ व प्रमाणित बीज का उपयोग करें। रोग ग्रसित फसल अवशेषों को जला कर या गाड़ कर नष्ट कर दें। खरपतवार से फसल को साफ रखें। मेटालेक्सिल (एप्रॉन 35 एस.डी.) से बीजोपचार 6 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करने से बीज द्वारा पनपने वाले रोगों को रोका जा सकता है। रोग की रोकथाम के लिए मैनकोजेब (डाइथेन एम 45) या रिडोमिल एम. जेड. 72 डब्लू. पी. फफूंदीनाशक के 0.25 प्रतिशत घोल (2) किलोग्राम दवा की मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से) का रोग दिखने पर छिड़काव करें अधिकतम तीन

छिड़काव ही आर्थिक दृष्टिकोण से उचित होते हैं। फसल की सिंचाई आवश्यकता से अधिक न करें। मेटालेक्सिल (एप्रॉन 35 एस.डी.) से बीजोपचार 6 ग्राम दवा प्रति किलोग्राम बीज की दर से उपचारित करने से बीज द्वारा पनपने वाले रोगों को रोका जा सकता है। रोग की रोकथाम के लिए मैनकोजेंच (डाइथेन एम 45) या रिडोमिल एम. जेड. 72 डब्लू. पी. फफूंदीनाशक के 0.25 प्रतिशत घोल (2 किलोग्राम दवा की मात्रा को 800 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टेयर की दर से) का का रोग दिखने पर छिड़काव करें।



तना गलन (स्कलेरोटीनिया गलन रोग)

इस बीमारी को श्वेत अथवा कॉलर गलन भी कहा जाता है। इस रोग के प्रकट होने पर तने के निचले भाग में मटमैले या भूरे रंग के फफोले दिखाई देते हैं। प्रायः यह फफोले रुई जैसे सफेद जाल से ढके होते हैं। पत्तियों पर इसके लक्षण कम ही दिखाई देते हैं। इसी कारण जब तक कि पूरा का पूरा पौधा अन्दर से गलन जाए, रोग ग्रस्त पौधे आसानी से पहचाने नहीं जा सकते। ये फफोले तने व पत्तियों को इस तरह ढक देते हैं कि पौधा मुरझाकर लटक जाता है और अंत में सूख जाता है। इस रोग के प्रभाव से पौधा बौना हो जाता है और समय से पहले ही पक जाता है। ग्रसित तने की सतह पर या मज्जा में भूरी सफेद या काली काली गोल आकृति के संरचनायें (स्कलेरोशिया) पाई जाती हैं। रोग के स्कलेरोशिया काले उड़द के दानों की तरह तने के भीतरी भाग में पनपते हैं, जिससे कि बाहर से देखने पर उसका आभास भी नहीं हो पाता है, कई बार ये स्कलेरोशिया तने की उपरी सतह पर भी दिखाई देते हैं।



रोकथाम

स्वस्थ, स्वच्छ व रोग रहित बीज का उपयोग करें। रोग ग्रसित फसल अवशेषों को जला कर या गाड़ कर नष्ट कर दें। गर्मी में गहरी जुताई करें। धान व मक्का इत्यादि उन फसलों चक्र अपनायें। कार्बन्डाजिम 0.1 प्रतिशत (1) ग्राम मात्रा को प्रति लीटर पानी की दर) फफूंदीनाशक का छिड़काव दो बार फूल आने के समय 20 दिन के अन्तराल (बुआई के 50 से 70 दिन पर) करने से रोग का बचाव किया जा सकता है। लहसुन का 2 प्रतिशत सत का छिड़काव बुआई के 50 दिन बाद जब फसल में 25–30 प्रतिशत फूल आ

जायें करने पर भी रोग की रोकथाम की जा सकती है। आवश्यकतानुसार दूसरा छिड़काव इसके 20 दिन बाद करें।

चूर्णिल आसिता

छाछ्या रोग के दिखाई देते ही प्रति हैक्टर 20 किलोग्राम गन्धक चूर्ण भुरकें या ढाई किलोग्राम घुलनशील गन्धक या 750 मिलीलीटर डाइनोकेप पानी में मिलाकर छिड़कें। फसल की बुआई समय से करें। रोग ग्रसित फसल अवशेषों को जला कर या गाड़ कर नष्ट कर दें। अगर यह फसल के कटाई के नजदीक देखी जाए तो किसान भाई चिन्ता न करें। लेकिन अगर यह बीमारी फलियां बनते समय दिखाई दे तो घुलनशील गन्धक (2 ग्राम प्रति लीटर पानी) या डिनोकाप (1) मिली. प्रति लीटर पानी) का घोल बनाकर छिड़काव करें।

समन्वित कीट नियन्त्रण –

चेपा के समन्वित कीट नियन्त्रण के लिए कीट के आर्थिक क्षति स्तर (10–15 प्रतिशत पौधों पर 26–28 चेपा प्रति 10 सेमी. तने की ऊपरी शाखा) में पाये जाने पर बायोएजेन्ट वर्टीसिलियम लीकेनाई 1 किलोग्राम प्रति हैक्टेयर एवं सात दिन के अंतराल पर मिथाईल डेमेटॉन 25 ई.सी. या डाईमेथोएट 30 ई. सी. 500 मिली प्रति हैक्टेयर का छिड़काव करें।

सरसों की खड़ी फसल में माहू कीट की आर्थिक स्तर आने पर इमीडाकलोपरीड 17.8 एम.एल. दवा / 27 ग्राम (150 एम.एल./हे–) या थायो मिथॉक्जाम 25 ग्राम (150 एम.एल./हे) प्रति हैक्टर की दर से 500 लीटर पानी में घोल कर छिड़काव करें तथा आवश्यकता होने पर 15 दिन बाद दोबारा छिड़काव करें।

कीट नियन्त्रण हेतु पौध संरक्षण सारिणी –

फसल को कीट रहित रखने के लिये खड़ी फसल में निम्न प्रकार पौध संरक्षण उपाय अपनायें:—

प्रथम छिड़काव / भुरकाव (अंकुरण के 7 से 10 दिन में) —मैलाथियॉन 5 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से प्रातः या सायं भुरकें अथवा मैलाथियान 50 ई सी सवा लीटर या डाईमिथोएट 30 ई सी 875 क्लोरपायरीफॉस 20 ई सी 600 मिलीलीटर प्रति हैक्टर पानी में मिलाकर छिड़काव करें। द्वितीय छिड़काव / भुरकाव दिसम्बर के अन्तिम सप्ताह में या मोयला दिखाई देते ही उपरोक्तानुसार ही दवाओं का छिड़काव करें। तृतीय छिड़काव / भुरकाव द्वितीय छिड़काव के 15 दिन बाद फूल आने के बाद मैलाथियॉन 5 प्रतिशत या कार्बेरिल 5 प्रतिशत चूर्ण 25 किलोग्राम प्रति हैक्टर भुरकें अथवा मैलाथियान 50 ई सी सवा लीटर या फार्मेथियॉन 25 ई सी एक लीटर या डायमिथोएट 30 ई सी 875 मिलीलीटर या क्लोरपायरीफॉस 20 ई सी 600 मिलीलीटर या कार्बेरिल 50 प्रतिशत घुलनशील चूर्ण ढाई किलोग्राम प्रति हैक्टर की दर से छिड़कें।

ध्यान रखें — सरसों की 40–45 दिन की फसल पर डायमिथोएट 30 ई सी मिथाईल या डिमेटॉन 25 ई सी एक लीटर प्रति हैक्टर के छिड़काव के बाद सरसों के तेल का प्रयोग सुरक्षित रूप से कर सकते हैं।

टिप्पी —

यदि फसल में तुलासिता या झुलसा रोग हो तो दो किलोग्राम मैन्कोजेब इनमें से किसी एक दवा के साथ मिला दें। यदि तीसरे छिड़काव के बाद भी एफिड्स का प्रकोप रहे तो इसके लिये बताई गई कोई भी एक दवा का छिड़काव या भुरकाव फिर दोहरायें। एफिड्स व छाछ्या के अच्छे नियन्त्रण हेतु हर दस कतारों के बाद चने की दो कतारे बोयें इससे छिड़काव में सुविधा रहेगी। सरसों की फसल को पाले से बचाने के लिये फसल पर गन्धक के तेजाब के 0.1 प्रतिशत घोल का छिड़काव फूल आने से पूर्व अच्छी तरह करें। इसे सम्भावित पाला की अवधि में दोहराते रहना चाहिये। सरसों में पाला पड़ने की सम्भावना प्रतीत होने पर

50–70 पीपीएम प्रति लीटर दर से डाई मिथायल सल्फोक्साइड (डीएमएसओ) का पर्ण छिड़काव करने से उपज में नुकसान कम होगा तथा आवश्यकता पड़ने पर 15–20 दिन बाद इसे दोहरावें

समेकित रोग प्रबंधन

समेकित रोग प्रबंधन के अन्तर्गत कई प्राकृतिक, यांत्रिक, जैविक एवं भौतिक कार्य करके रोगों का प्रभावी नियंत्रण किया जा सकता है। सरसों के उत्पादन एवं उत्पादकता को बढ़ाने के लिए हम इस प्रकार की तकनीकें काम में लें जिससे शस्य परिस्थितिकी तंत्र में सम्यक संतुलन बना रहे और उपज में हानि कम से कम हो। इसके लिए हम निम्न उपाय अपना सकते हैं

1. ग्रीष्म ऋतु में मिट्टी पलटन वाले हल से गहरी जुताई करें। ऐसा करने से भूमि में उपस्थित रोग जनक के निवेश द्रव्य धूप के कारण नष्ट हो जाते हैं जिससे नई फसल प्राथमिक संक्रमण से बच जाती है।
2. विभिन्न शस्य परिस्थितिकीय क्षेत्रों में बुआई हेतु कई किसें अनुशंसित की गई हैं। अपने क्षेत्र विशेष हेतु अनुशंसित किस्मों का चुनाव करें। रोग रोधी उन्नत किस्मों की बुवाई करनी चाहिए क्योंकि इनमें रोगों से लड़ने की क्षमता होती है।
3. सरसों की बुवाई उपयुक्त समय पर ही करें। 10–25 अक्टूबर तक बुवाई करने से सरसों के प्रमुख रोग जैसे काला धब्बा, सफेद रतुआ या रोली, मुदुरोमिल आसिता आदि रोगी को पनपने व फैलने से रोका जा सकता है।
4. प्रमाणीकृत, स्वस्थ, स्वच्छ व रोग रहित बीजों का प्रयोग करना चाहिये।
5. संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करना चाहिए। फसल में आवश्यकता से अधिक खाद न डालें। ज्यादा नत्रजन या यूरिया डालने से फसल हरी-भरी दिखती है, परंतु उपज में बहुत अधिक अंतर नहीं आता अपितु बीमारी के प्रकोप की संभावना बढ़ जाती है। अतः संतुलित मात्रा में ही उर्वरकों का प्रयोग श्रेस्कर होता है।
6. खेत की साफ सफाई का विशेष ध्यान रखें। खेत में खरपतवार जितने कम होंगे, फसल में बीमारी का प्रकोप भी उतना ही कम होगा। रोग ग्रसित पौधों को एकत्र कर जला देना चाहिये। गत वर्ष के फसल अवशेषों को भी नष्ट कर, खेतों को स्वच्छ रखना चाहिये ताकि रोग संक्रमण के स्त्रोत या तो समूल नष्ट हो जायें या बहुत ही कम मात्रा में रहें।
7. सरसों की फसल आवश्यकता से ज्यादा पानी सहन नहीं कर सकती। खेत से अतिरिक्त जल के निकास की समुचित व्यवस्था रखनी चाहिए। इसके लिए जहां पानी जमने की संभावना है उस जगह एक छोटी सी नाली खोदकर उस जमे हुए पानी के निष्कासन का उपाय करें। आवश्यकता से अधिक पानी न दें। फलिया बनते समय पानी दिये जाने पर बीमारियों आने की संभावना ज्यादा रहती है अतः इस समय सिंचाई न करें।
8. उचित फसल चक्र— एक ही फसल की बुवाई लगातार नहीं करनी चाहिए। इससे फसल में लगे रोग जनकों को अगले मौसम में पौष्क पौधा नहीं मिलने से वे भोजन के अभाव में मर जायेंगे। उचित फसल चक्र रोग प्रबंधन का एक सस्ता व अच्छा उपाय है। इसके द्वारा रोग से प्रभावित न होने वाली अपरपोषी फसलों को बोया जाता है जिससे रोगाणुओं की खाद्य श्रृंखला टूट जाती है और रोग का विस्तार रुक जाता है। सरसों के प्रमुख रोग जैसे तना सड़न, क्लब रुट व मृदुलरोमिल आसिता आदि रोगों के बचाव हेतु धान, गेहूँ व जी आदि का फसल चक्र अपनाने चाहिये। मटर, सेम, मसूर व सूर्यमुखी की फसलों से बचना चाहिये क्योंकि ये सभी फसलें तना सड़न रोग के प्रति सुग्राही हैं।

सरसों उत्पादन के साथ मधुमक्खी पालन करें किसान, होगा कई गुना मुलानाफा

सरसों उत्पादक किसानों के लिए मधुमक्खी पालन करना एक वरदान है। सरसों की फसल में अधिक समय तक फूल बने रहते हैं इसलिए मधुमक्खी पालन इस फसल के साथ करने से शहद का अधिक उत्पादन होगा और लाभ भी अधिक मिलेगा। साथ ही मधुमक्खियों द्वारा परागण से सरसों उत्पादन में भी बढ़ोत्तरी होगी। इससे किसान अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर सकते हैं। वर्तमान में कृषि जोत एवं संसाधन लगातार घटते जा रहे हैं और किसानों के सामने आय के विकल्प सीमित हो रहे हैं। इसलिए किसानों को अपनी आमदनी बढ़ाने के लिए कृषि आधारित वैकल्पिक व्यवसाय अपनाने होगे तभी खेती लाभदायक होगी। सरसों की खेती और मधुमक्खी पालन एक-दूसर का पूरक है। दोनों को एक-दूसरे से फायदा मिलता है। किसान यदि मधुमक्खी पालन के साथ सरसों की खेती करे तो कम लागत में डबल मुनाफा मुनाफा कमा सकते हैं। सरसों के खेत के आस-पास मधुमक्खी पालन से सरसों की उपज क्षमता में भी 25 प्रतिशत वृद्धि हो जाती है। मधुमक्खी पालन छोटे कृषक एवं भूमिहीन लोग भी कर सकते हैं क्योंकि इसके लिए कोई क्षेत्र विशेष की आवश्यकता नहीं होती है। उन्होंने कहा कि मधुमक्खी पालन को किसानों या युवाओं को समूह बनाकर करना चाहिये ताकि इसके प्रबंधन में आसानी हो।

मधुमक्खी पालन पर अनुदान

मधुमक्खी के छत्ते 8 फ्रेम वाले प्रति छत्ता 2000 रुपये प्रति लाभार्थी अधिकतम 50 छत्ते के लिए लागत का 40 प्रतिशत व शहद निकालने वाले (4 फ्रेम) फूड ग्रेड कंटेनर (30 किलोग्राम), जाली समेत मधुमक्खी पालन सेट 20,000 रुपये/सेट प्रति लाभार्थी एक सेट के लिए लागत का 40 प्रतिशत।



फसल की कटाई –

सरसों की फसल फरवरी मार्च तक पक जाती है। आमतौर पर जब पत्ते झड़ने लगे और फलियां पीली पड़ने लगे तो फसल काट ले अन्यथा कटाई में देर होने पर फलियों के चटकने के कारण दाने खेत में झड़ जाने की आशंका रहती है।

धन्यवाद